22वां स्थापना दिवस

दमण से प्रकाशित हिन्दी दैनिक

Asli Azadi Dainik @AsliAzadiDainik aslizadidainikofficial

असली आज़ादी

■ वर्षः 22, अंकः 01 ■ दमण, बुधवार 16, सितंबर 2026 ■ पृष्ठः 8 ■ मूल्यः 2 रु ■ RNI NO-DDHIN/2005/16215 ■ संपादक- विजय जगदीशचंद्र भट्ट

संपादकीय

असली आजादी दैनिक का 22वें वर्ष में प्रवेश: संघ प्रदेश की हर घटना का रहा साक्षी

सितंबर 2005 में संघ प्रदेश के दमण जिले से असली आजादी दैनिक अखबार का शुभारंभ किया गया था। आज असली आजादी दैनिक 21 साल का सफर पूरा कर 22वें वर्ष में प्रवेश कर रहा है। पिछले 21 वर्षों में संघ प्रदेश में जो भी घटनाक्रम रहा, चाहे जनआंदोलन हो, चाहे राजनीतिक हो, चाहे प्रशासनिक हो, चाहे सामाजिक हो, चाहे औद्योगिक हो हर क्रम का असली आजादी साक्षी रहा है। 21 साल के सफर में हमने कई उतार-चढाव देखें। इस सफर में हमें कई बार मुश्किलों का सामना करना पडा है। कठिन परिस्थिति में भी आप सभी ने हमारा साथ दिया है। असली आजादी ने हमेशा जनता और प्रशासन के बीच समन्वय बनाने का काम किया है। असली आजादी ने जहां जनता की आवाज को उठाया है, वहीं प्रशासन की जनकल्याणकारी योजनाओं का प्रचार-प्रसार करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। असली आजादी का अब तक का सफर जनता-जनार्दन, प्रशासन, जनप्रतिनिधियों, राजनीतिक अग्रणियों, होटल एवं इंडस्ट्रीज के साथियों, पाठकों के अपार प्रेम और सहयोग के कारण संभव हुआ है। 22वें वर्ष में प्रवेश पर हम भगवान से यहीं प्रार्थना करते हैं कि असली आजादी हमेशा इसी तरह जन-जन का अखबार बना रहे। जनता की अपेक्षाओं और विकास जरूरतों की बात शासन-प्रशासन तक पहुंचाता रहे। साथ ही साथ सरकार की जनता के लिए जारी की योजनाओं एवं अभियानों की जानकारी हम इसी तरह पहुंचाते रहें।

विजय भट्ट

2029 लोकसभा चुनाव की तैयारियों में जुटा चुनाव आयोग

■ 46 प्रतिशत ज्यादा होंगे पोलिंग स्टेशन, 2029 में 15.38 लाख मतदान केंद्रों पर होगा मतदान

नई दिल्ली(ईएमएस)। भारत के चुनाव आयोग ने अभी से 2029 में होने वाले लोकसभा चुनाव की तैयारी शुरू कर दी है। जानकारी के अनुसार, अगले चुनाव के लिए मतदाताओं तक पहुंच बढ़ाने के लिए मतदान केंद्रों की संख्या बढ़ाई जाएगी। आंकड़ों पर नजर डालें तो देश में मतदान केंद्रों की संख्या लगातार बढ़ी है। 2019 में जहां करीब 10.37 लाख मतदान केंद्र थे, वहीं 2024 में इनकी संख्या बढ.कर करीब 10.52 लाख हो गई। अब 2029 के लिए करीब 15.38 लाख मतदान केंद्रों का अनुमान सामने आया है। चुनाव आयोग के पास फिलहाल करीब 30.48 लाख बैलेट यूनिट और 21.92 लाख कंट्रोल यूनिट उपलब्ध हैं। इन आंकड़ों की तुलना 2019 के लोकसभा चुनाव से करें तो उस समय चुनाव आयोग के पास करीब 14.88 लाख बैलेट यूनिट और 11.30 लाख कंट्रोल यूनिट थीं। यानी पिछले कुछ वर्षों में ईवीएम का मौजूदा स्टॉक काफी बढ़ा है। 2029 के लोकसभा चुनाव से पहले चुनाव आयोग करीब 3.57 लाख बैलेट यूनिट और 1.25 लाख कंट्रोल यूनिट खरीदने की योजना बना रहा है, खास बात यह है कि आयोग ने इतनी ही संख्या में पुरानी मशीनों को रिटायर करने की भी योजना बताई है। इसका मतलब है कि नई ईवीएम की खरीद से आयोग अपने कुल बेड़े को बड़े पैमाने पर बढ़ाने की बजाय पुरानी मशीनों को नई मशीनों से बदलने की तैयारी कर रहा है। यानी 3.57 लाख बैलेट यूनिट और 1.25 लाख कंट्रोल यूनिट की खरीद लगभग वन-टू-वन रिप्लेसमेंट के तौर पर होगी।

ईवीएम और वीवीपीएटी पर 486 करोड़ का खर्च: चुनाव आयोग के मुताबिक, 2029 के लोकसभा चुनाव से पहले ईवीएम और वीवीपीएटी की खरीद पर करीब 486 करोड़ रुपये खर्च होने का अनुमान है। वीवीपीएटी मशीन के जरिए मतदाता यह देख सकता है कि उसने जिस उम्मीदवार को वोट दिया है, उसकी पर्ची कुछ समय के लिए मशीन की पारदर्शी खिड.की के पीछे दिखाई देती है, इसके बाद यह पर्ची सीलबंद बॉक्स में चली जाती है।

क्राइम ब्रांच एवं एसीबी एसपी तनु शर्मा ने अवध रेसिडेंसी के गणेश महोत्सव में पहुंचकर गणपति बप्पा का लिया आशीर्वाद

■ दमण की थीम पर आयोजित गणेश उत्सव बना आकर्षण का केन्द्र

असली आजादी न्यूज नेटवर्क, दमण, 15 सितंबर। वापी के चला स्थित अवध रेसिडेंसी में आस्था एवं श्रद्धापूर्वक गणेश महोत्सव मनाया जा रहा है। गणेश चतुर्थी के दिन विधि-विधान के साथ विघ्नहर्ता भगवान गणेश की प्रतिमा स्थापित की गई। दमण में हुए विकास प्रोजेक्टों की थीम पर गणेश पंडाल को सजाया गया है। दमण के प्रमुख पर्यटन स्थलों को भी झांकी माध्यम से दर्शाया गया है। संघ प्रदेश दादरा नगर हवेली और दमण-दीव की क्राइम ब्रांच एवं एंटी करप्शन ब्यूरो (एसीबी) एसपी तनु शर्मा ने गणेश महोत्सव में पहुंचकर गणपति बप्पा का दर्शन कर आशीर्वाद लिया। इस अवसर पर उन्होंने विघ्नहर्ता भगवान गणेश की आरती उतारकर देश एवं प्रदेश की सुख, शांति एवं समृद्धि की कामना की। इस मौके पर गणेश महोत्सव आयोजकों की ओर से एसपी तनु शर्मा का स्वागत भी किया गया।

यूपीआई पर चार्ज की अटकलों पर सरकार ने लगाया विराम: 2000 तक के ट्रांजेक्शन पर फीस नहीं

नई दिल्ली,(ईएमएस)। हाल ही में केंद्र की मोदी सरकार ने एक नया गजट नोटिफिकेशन जारी कर यूपीआई (यूपीआई) भुगतान प्रणाली को लेकर महत्वपूर्ण स्पष्टीकरण दिया है। इस नोटिफिकेशन के अनुसार, 2000 रुपये तक के यूपीआई लेनदेन को बिना शुल्क वाला इलेक्ट्रॉनिक पेमेंट माध्यम घोषित किया गया है। हालांकि, इसका यह बिल्कुल भी मतलब नहीं है कि 2000 रुपये से अधिक के यूपीआई भुगतान पर तत्काल कोई नया शुल्क लागू हो गया है। (समाचार का शेष पेज 3 पर)

शिवशक्ति ग्रुप के गणेश उत्सव में पहुंचे प्रदेश भाजपा महामंत्री जिग्नेश पटेल:ओबीसी मोर्चा अध्यक्ष हरीश पटेल ने किया स्वागत

असली आजादी न्यूज नेटवर्क, दमण 15 सितंबर। सोमनाथ विस्तार में शिवशक्ति ग्रुप द्वारा हर वर्ष की तरह इस वर्ष भी भव्य गणेश उत्सव मनाया जा रहा है। शिवशक्ति ग्रुप द्वारा गणेश चतुर्थी के दिन विधि-विधान से विघ्नहर्ता भगवान गणेश की प्रतिमा स्थापित की गई। गणेश महोत्सव के दूसरे दिन संघ प्रदेश दादरा नगर हवेली और दमण-दीव भाजपा महामंत्री जिग्नेश पटेल एवं उनके ग्रुप ने शिवशक्ति ग्रुप के गणेश महोत्सव में पहुंचकर गणपति बप्पा का आशीर्वाद लिया। साथ ही प्रदेश एवं देश की सुख, शांति एवं खुशहाली की कामना की। इस अवसर पर शिवशक्ति ग्रुप की ओर से सामाजिक अग्रणी एवं प्रदेश भाजपा ओबीसी मोर्चा अध्यक्ष हरीश पटेल ने भाजपा महामंत्री जिग्नेश पटेल का स्वागत किया। इस मौके पर दमण जिला पंचायत की उपप्रमुख रीना पटेल भी मौजूद रहीं। गौरतलब है कि शिवशक्ति ग्रुप द्वारा आयोजित गणेश उत्सव में दमण-दीव के पूर्व सांसद स्वर्गीय डाह्याभाई पटेल हर वर्ष पहुंचकर बप्पा का आशीर्वाद लेते थे। इसी परंपरा को निभाते हुए पूर्व सांसद डाह्याभाई के सुपुत्र जिग्नेश पटेल ने शिवशक्ति ग्रुप के गणेश उत्सव में पहुंचकर गणपति बप्पा का आशीर्वाद लिया। साथ ही गणेश उत्सव के आयोजन पर आयोजकों को बधाई भी दी।

डीएमसी काउंसिलर सिंपल काटेला ने विभिन्न गणेश पंडालों में पहुंचकर गणपति बप्पा के दर्शन कर लिया आशीर्वाद

■ डीएमसी वॉर्ड नं. 9 में विभिन्न स्थानों पर स्थापित गणपति बप्पा का दर्शन कर सिंपल काटेला ने सुख, समृद्धि एवं खुशहाली की कामना की

असली आजादी न्यूज नेटवर्क, दमण 15 सितंबर। डीएमसी काउंसिलर सिंपल काटेला ने गणेशोत्सव के पावन अवसर पर वॉर्ड नं. 9 में विभिन्न स्थानों पर विराजमान गणपति बप्पा के दर्शन कर पूजा-अर्चना की तथा बप्पा का आशीर्वाद प्राप्त किया। इस अवसर पर सिंपल काटेला ने वॉर्ड के विभिन्न गणेश मंडलों एवं श्रद्धालुओं से मुलाकात की और सभी को गणेशोत्सव की हार्दिक शुभकामनाएं दीं। श्रद्धा और भक्तिमय वातावरण के बीच उन्होंने भगवान श्री गणेश से वॉर्ड नं. 9 सहित पूरे दमण के नागरिकों की सुख-समृद्धि, उत्तम स्वास्थ्य, शांति और खुशहाली की प्रार्थना की। सिंपल कटेला ने कहा कि गणेशोत्सव केवल आस्था और भक्ति का पर्व ही नहीं, बल्कि समाज को एकजुट करने, आपसी भाईचारे और सेवा की भावना को मजबूत करने वाला उत्सव भी है। उन्होंने सभी गणेश मंडलों द्वारा श्रद्धा, अनुशासन और उत्साह के साथ किए जा रहे आयोजन की सराहना करते हुए सभी कार्यकर्ताओं एवं श्रद्धालुओं को शुभकामनाएं दीं।

नागालैंड में मिलावटी शराब पीने से 10 की मौत, आबकारी विभाग ने जारी की चेतावनी

कोहिमा (एजेंसी)। शराबबंदी वाले राज्य नागालैंड के तुएनसांग में मिलावटी शराब पीने से 10 लोगों की मौत के बाद राज्य के आबकारी एवं निषेध विभाग ने अज्ञात या संदिग्ध स्रोत की शराब के सेवन के खिलाफ चेतावनी जारी की है। तुएनसांग पुलिस ने बताया कि 10 से 12 सितंबर के बीच मरने वालों में से 9 लोगों का शराब के सेवन से प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष संबंध था, हालांकि मौत के कारणों का अभी तक निर्णायक रूप से पता नहीं चला है। नागालैंड के डीजीपी ने बताया कि पीड़ितों की मौत मिलावटी शराब पीने से हुई। पुलिस के मुताबिक एक अन्य व्यक्ति ने आत्महत्या की है इस मामले की अलग से जांच की जा रही है। मीडिया रिपोर्ट में स्थानीय लोगों के हवाले से बताया गया है कि वास्तविक मृतकों की संख्या इससे ज्यादा हो सकती है और संभवत: कुछ मौतें दर्ज ही नहीं हुई हैं। एक आधिकारिक विज्ञप्ति में कहा गया है कि 12 सितंबर को तुएनसांग पुलिस को तुएनसांग सिविल अस्पताल में भर्ती लोगों की लगातार हो रही मौतों के संबंध में रिपोर्ट मिली थी। पुलिस ने बताया कि शुरुआती पूछताछ में पता चला है कि अधिकतर मामलों में मृतकों ने धुंधली दृष्टि, गंभीर सिरदर्द, चक्कर आना, मतली और उल्टी जैसे लक्षण पैदा होने से पहले शराब का सेवन किया था। पुलिस ने कहा कि मिलावटी शराब का सेवन मौतों का संभावित कारण माना जा रहा है, लेकिन इस स्तर पर वैज्ञानिक रूप से इसकी पुष्टि नहीं की जा सकी है। बयान में कहा गया है कि जांच के तहत वैज्ञानिक और फोरेंसिक प्रक्रियाएं अपनाई जाएंगी।

यूजीसी पर भागवत की दो टूक

भीलवाड़ा (एजेंसी)। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ प्रमुख मोहन भागवत ने यूजीसी के प्रस्तावित नियमों को लेकर स्पष्ट कहा है। 'न यह कानून बना है,ना बनेगा।' भीलवाड़ा में जैन आचार्य पुलक सागर महाराज से मुलाकात के दौरान भागवत ने कहा, यूजीसी से जुड़े नियम अभी प्रस्तावित हैं। आचार्य पुलक सागर ने इन प्रावधानों को लेकर सामाजिक विभाजन की आशंका जताते हुए चिंता व्यक्त की है। इसी बीच केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने समान नागरिक संहिता यानी यूसीसी को लेकर बड़ा राजनीतिक लक्ष्य सामने रखा है। मुंबई में शाह ने कहा कि भाजपा-नीत राजग की 21 राज्य सरकारें 2029 से पहले यूसीसी लागू करेंगी। इन दोनों बयानों को लेकर राजनीतिक बहस तेज हो गई है। यह विषय इसलिए महत्वपूर्ण है, यूजीसी और यूसीसी दो अलग विषय हैं। एक उच्च शिक्षा के नियमन से जुड़ा है।दूसरा विवाह, तलाक, उत्तराधिकार जैसे व्यक्तिगत कानूनों में समान व्यवस्था से संबंधित है। इसलिए भागवत और शाह के बयानों को लेकर देश में राजनीतिक बवाल बढ़ गया है। संघ-भाजपा खेमे के दो महत्वपूर्ण संदेशों के रूप में देखा जाना चाहिए। वर्तमान बहस का असली सवाल यह है। प्रस्तावित यूजीसी नियमों पर सरकार आगे क्या रुख अपनाती है। कई राज्यों में यूजीसी को लागू कर दिया गया है।यूसीसी को 2029 से पहले लागू करने के लिए राज्यों में कितनी सहमति बन पाती है। यह देखना जरूरी है।

चंदौसी में गंगा-जमुनी तहजीब की मिसाल-मुस्लिम समाज ने गणपति को चढ़ाए दो क्विंटल लड्डू

संभल (एजेंसी)। उत्तरप्रदेश के संभल जिले के चंदौसी में मुस्लिम समाज ने भगवान गणेश को दो क्विंटल लड्डू का भोग चढ़ाकर आपसी भाईचारे और सांप्रदायिक सौहार्द की अनोखी मिसाल पेश की। गणेश चौथ मेला के दौरान हुआ यह आयोजन सालों से चली आ रही एक अनूठी परंपरा का हिस्सा है। चंदौसी का गणेश चौथ मेला अपनी धार्मिक आस्था और गंगा-जमुनी तहजीब के लिए मशहूर है। इस वर्ष भी मेला का उद्घाटन विभिन्न धर्मों के प्रतिनिधियों ने मिलकर किया था, जो इस क्षेत्र की साझा संस्कृति को दर्शाता है। सोमवार को मेला में भव्य रथ यात्रा भी निकाली गई, जिसमें विभिन्न प्रकार की स्वचालित झांकियां मुख्य आकर्षण थीं और इन्हें देखने के लिए शहर के मुख्य मार्गों पर बड़ी संख्या में लोग उमड़े थे। इस धार्मिक आयोजन के बीच, मुस्लिम समाज की ओर से भगवान गणेश को चढ़ाए गए दो क्विंटल लड्डू की खूब चर्चा रही। मुस्लिम समाज प्रतिनिधि ने बताया कि मुस्लिम समाज साल 2001 से हर वर्ष भगवान गणेश को लड्डू का भोग चढ़ाता आ रहा है। उन्होंने स्पष्ट किया कि यह केवल एक धार्मिक अनुष्ठान में भागीदारी नहीं, बल्कि आपसी प्रेम, सद्भाव और सांप्रदायिक सौहार्द का जीवंत संदेश है। इस अनूठे प्रयास ने एक बार फिर चंदौसी की पुरानी परंपरा और आपसी सौहार्द को मजबूती से उजागर किया, जहाँ त्यौहारों को मिलकर मनाने की भावना हर वर्ष और प्रगाढ़ होती दिखती है।

केदारनाथ यात्रा तीसरे दिन भी बंद, देश के कई राज्यों में बारिश-बाढ़ का अलर्ट

देहरादून (एजेंसी)। उत्तराखंड में केदारनाथ पैदल मार्ग पर लगातार पत्थर गिरने के कारण केदारनाथ यात्रा तीसरे दिन भी बंद रही। सुरक्षा बलों ने करीब 7,000 यात्रियों को सुरक्षित निकालकर गौरीकुंड की ओर भेज दिया है, जबकि 500 से अधिक तीर्थयात्री अभी फंसे हुए हैं। राहत की बात यह है कि केदारनाथ धाम के लिए आज से हेलीकॉप्टर सेवाएँ शुरू हो गई हैं, लेकिन पैदल यात्रा अभी भी रोकी गई है।इस बीच, उत्तर प्रदेश, राजस्थान, हिमाचल प्रदेश, हरियाणा और पंजाब सहित- देश के कई राज्यों में भारी बारिश का अलर्ट जारी किया है।

यूसीसी पर एनडीए के सहयोगी दलों ने बढ़ाई भाजपा की चिंता

शाह के बयान के बाद सामने आए तीन अलग सुर

नई दिल्ली, एजेंसी।
केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने हाल ही में 2029 तक 21 भाजपा-एनडीए शासित राज्यों में समान नागरिक संहिता (यूसीसी) लागू करने का लक्ष्य रखा है। हालांकि, उनके इस बयान के तुरंत बाद ही सत्तारूढ़ राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन के कुछ प्रमुख सहयोगी दलों ने इस मुद्दे पर सावधानी भरा रुख अपना लिया है, जिससे भाजपा की राह थोड़ी मुश्किल होती दिख रही है। तेलुगु देशम पार्टी (टीडीपी), जनता दल यूनाइटेड (जेडीयू) और लोक जनशक्ति पार्टी (रामविलास) ने यूसीसी को लेकर अपने-अपने विचार रखे हैं, जो गठबंधन के भीतर बढ़ती सुगबुगाहट को दर्शाते हैं।

संसद में बहुमत बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाली तेलुगु देशम पार्टी ने यूसीसी पर सशर्त समर्थन का संकेत दिया है। लोकसभा में टीडीपी के नेता लावु कृष्ण देवरायालु ने कहा कि जब इसकी जरूरत महसूस होगी, तब इस पर विचार किया जाएगा और इसे अपनाने से पहले विभिन्न हितधारकों को चर्चा में शामिल किया जाएगा। यह भी गौरतलब है कि 2024 के लोकसभा

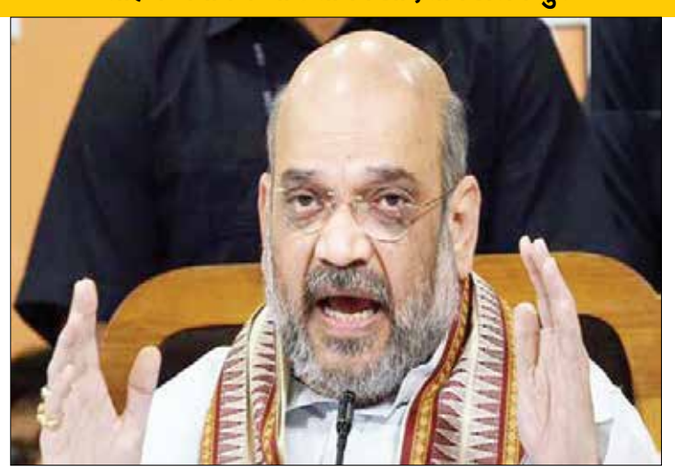

चुनाव से पहले टीडीपी प्रमुख और आंध्र प्रदेश के मुख्यमंत्री एन चंद्रबाबू नायडू ने यूसीसी की बात आने पर मुस्लिम समुदाय के साथ खड़े होने की बात कही थी, जो उनके वर्तमान रुख में सावधानी का संकेत देता है। बिहार में नीतीश कुमार की जनता दल यूनाइटेड ने अपना रुख साफ करते हुए कहा है कि पार्टी राष्ट्रीय स्तर पर यूसीसी विधेयक का समर्थन करती है, लेकिन इसे बिहार में लागू करने के पक्ष में नहीं है। पार्टी के कार्यकारी अध्यक्ष संजय झा ने केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह से मुलाकात कर इस मुद्दे पर चर्चा करने की बात कही है। नीतीश कुमार अतीत में यूसीसी का समर्थन कर चुके हैं, लेकिन उनका जोर इस बात पर रहा है कि सभी समुदायों को साथ लेकर आम सहमति बनाई जानी चाहिए।

भाजपा के एक अन्य सहयोगी और लोक जनशक्ति पार्टी (रामविलास) के नेता चिराग पासवान ने भी यूसीसी पर सावधानी भरा रुख अपनाया। उन्होंने संविधान में विभिन्न समुदायों की परंपराओं और प्रथाओं को मान्यता दिए जाने का हवाला देते हुए विविधता के महत्व पर जोर दिया। पासवान ने कहा कि यूसीसी का प्रस्ताव सार्वजनिक किया जाना चाहिए और संबंधित हितधारकों से व्यापक चर्चा व विचार-विमर्श के बाद ही पार्टी अपना रुख स्पष्ट करेगी। उन्होंने अनुसूचित जनजातियों को मिली छूट का भी विशेष रूप से उल्लेख किया। हालांकि, कुछ सहयोगी दल यूसीसी के प्रति अपना पूर्ण समर्थन दोहरा चुके हैं। एकनाथ शिंदे की शिवसेना और हिंदुस्तानी अवाम मोर्चा (सेक्युलर) ने यूसीसी को लेकर अपना समर्थन व्यक्त किया। शिवसेना नेता श्रीकांत शिंदे ने यूसीसी को समानता, न्याय और राष्ट्रीय एकता के सिद्धांतों पर आधारित बताया, जबकि हम के राष्ट्रीय अध्यक्ष संतोष कुमार सुमन ने अमित शाह के यूसीसी संबंधी बयान का पूरे समर्थन के साथ स्वागत किया।

बिहार में बाढ़ से जानमाल को नुकसान-खड़गे और राहुल गांधी ने जताया दुख

नई दिल्ली (एजेंसी)। कांग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे और पूर्व अध्यक्ष राहुल गांधी ने बिहार में बाढ़ से हुए जानमाल के नुकसान पर दुख जताया और पार्टी के कार्यकर्ताओं से प्रभावित लोगों की मदद के लिए हाथ बढ़ाने अपील की। खड़गे ने 'एक्स' पर पोस्ट कर कहा- बिहार में बाढ़ से हुई जनहानि अत्यंत पीड़ादायक है। शोक संतप्त परिवारों के प्रति मेरी गहरी संवेदनाएं हैं। उन्होंने कहा कि 15 जिलों में करीब 50 लाख लोग बाढ़ से प्रभावित हैं और हजारों गांवों में जनजीवन अस्त-व्यस्त है। खड़गे ने इस बात पर जोर दिया कि संकट की इस घड़ी में सरकार की प्राथमिकता हर प्रभावित परिवार तक राहत और मदद पहुंचाने की होनी चाहिए। उन्होंने कहा कि सरकार और प्रशासन राहत, बचाव, चिकित्सा सहायता और पुनर्वास कार्यों में कोई कसर न छोड़ें। मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक खड़गे ने कहा कि कांग्रेस के सभी कार्यकर्ताओं से अपील है कि वे प्रभावित क्षेत्रों में आगे बढ़कर लोगों की मदद करें। पूरा देश इस कठिन समय में बिहार के साथ खड़ा है। राहुल गांधी ने सरकार और प्रशासन से राहत एवं बचाव अभियान पूरी तत्परता से चलाकर प्रभावित परिवारों तक जरुरी मदद जल्द पहुंचाने का आग्रह किया। उन्होंने एक्स पर पोस्ट में कहा- बिहार में आई विनाशकारी बाढ़ से हुई जनहानि अत्यंत हृदयविदारक है। उन्होंने कहा कि इस आपदा में अपने प्रियजनों को खोने वाले परिवारों के प्रति अपनी गहरी संवेदनाएं व्यक्त करता हूं। त्रासदी से प्रभावित सभी लोगों के साथ मेरी सहानुभूति है। राहुल ने कांग्रेस कार्यकर्ताओं से अपील है कि वो आगे बढ़कर प्रभावित लोगों की हरसंभव मदद करें। बता दें बिहार और पड़ोसी देश नेपाल के जलग्रहण क्षेत्र में पिछले चार-पांच दिनों से लगातार हो रही बारिश के कारण राज्य में बाढ़ की स्थिति गंभीर बनी हुई है और 15 जिलों में करीब 50 लाख लोग प्रभावित हुए हैं। कई नदियां खतरे के निशान से ऊपर बह रही हैं। आपदा प्रबंधन विभाग ने सोमवार को जारी बयान में बताया कि पटना, भोजपुर, सारण, वैशाली, भागलपुर, बेगूसराय, बक्सर, समस्तीपुर, मुंगेर, कटिहार, लखीसराय, खगड़िया, पूर्णिया, मधेपुरा और अररिया जिलों के 88 प्रखंडों की 575 ग्राम पंचायतों के 49.36 लाख लोग बाढ़ से प्रभावित हैं।

गोल्डन खड़ाऊ, चांदी के कड़े: धीरेंद्र शास्त्री ने अंबानी इवेंट में जीता दिल

मुंबई, एजेंसी।
बीती रात अंबानी परिवार ने मुंबई स्थित अपने घर में गणपति बप्पा का भव्य स्वागत किया, जिसमें बॉलीवुड, खेल और राजनीतिक जगत के साथ-साथ कई धर्मगुरुओं ने शिरकत की। बाबा रामदेव और जया किशोरी के अलावा, बागेश्वर धाम के धीरेंद्र शास्त्री भी अंबानी के गणेशोत्सव में पहुंचे। एंटीलिया में धीरेंद्र शास्त्री का लुक सबसे ज़्यादा चर्चा का विषय रहा, खासकर उनके पैरों ने सबका ध्यान खींचा।

हमेशा की तरह भगवा कुर्ते और सफ़ेद धोती में दिखे शास्त्री ने मरून शॉल ओढ़ी हुई थी और माथे पर चंदन-टीका लगाए थे। उनका अंदाज जितना सादा था, उतना ही क्लासी लग रहा था। लेकिन उनके पैरों ने सभी को अचंभित किया, क्योंकि धीरेंद्र शास्त्री जूतों या चप्पलों की जगह उन्होंने पारंपरिक गोल्डन खड़ाऊ पहने थे। पैरों में आलता लगा हुआ था और चांदी के कड़े भी नजर आए, जो उनके पारंपरिक अवतार को और ज़्यादा ख़ास बना रहे थे। धीरेंद्र शास्त्री के आलता लगे पैरों की तस्वीरें इंटरनेट पर तेज़ी से वायरल हुईं, और लोगों ने उनके इस सादगीपूर्ण और सांस्कृतिक रूप को बेहद सराहा। इस भव्य आयोजन में बाबा भी भगवा वेश में दिखे, जबकि सलमान खान, रेखा, करीना-करिश्मा कपूर, कटरीना-विक्की जैसे बड़े बॉलीवुड सितारे और कई क्रिकेटर्स अपने परिवारों के साथ बप्पा के दर्शन करने पहुंचे थे।

राहुल-प्रियंका ने 130 नेताओं से पूछा- आपने क्या किया?

-कांग्रेस में आधे सचिवों की छुट्टी की संभावना

नई दिल्ली, एजेंसी।
कांग्रेस संगठन में लंबे समय से प्रतीक्षित बड़े फेरबदल की दिशा अब साफ होती दिख रही है। पार्टी नेतृत्व संगठन को नए सिरे से मजबूत करने की तैयारी में है और जल्द ही अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी (एआईसीसी) के सचिवों में भारी बदलाव कर सकती है। मौजूदा सचिवों में से करीब आधे को उनकी जिम्मेदारियों से मुक्त किए जाने की संभावना है। इस कवायद के तहत, पिछले एक सप्ताह में राहुल गांधी, प्रियंका गांधी वाड्रा और एआईसीसी महासचिव (संगठन) केसी वेणुगोपाल ने लगभग 130 संभावित उम्मीदवारों के साक्षात्कार लिए हैं।

नए सचिवों के चयन के लिए समूह साक्षात्कार की प्रक्रिया 7 सितंबर से शुरू हुई थी, जिसमें 12 से 14 नेताओं के बैच में उम्मीदवारों से सवाल पूछे गए। सूत्रों के अनुसार, राहुल गांधी, प्रियंका गांधी और केसी वेणुगोपाल ने प्रत्येक उम्मीदवार के लिए तैयार डोजियर के आधार पर उनके काम, प्रदर्शन, पार्टी संगठन में भूमिका और योगदान को लेकर विस्तार से सवाल किए। उम्मीदवारों से अपनी भूमिका में किए गए कार्यों, उसके पीछे के कारणों, पार्टी के लिए योगदान और उन क्षेत्रों के बारे में पूछा गया जहां कमी रह गई। उनसे काल्पनिक परिस्थितियों, कमजोर प्रदर्शन वाले राज्यों में पार्टी को मजबूत करने के उपायों और संगठन सृजन अभियान पर उनके विचारों को लेकर भी प्रश्न पूछे गए। उम्मीदवारों से उनके राजनीतिक सफर और सबसे उल्लेखनीय प्रदर्शन के बारे में भी पूछा गया। इस बड़े फेरबदल से पहले, राहुल गांधी और प्रियंका गांधी वाड्रा मंगलवार को मौजूदा एआईसीसी सचिवों से भी मुलाकात करेंगे। इस बैठक में उनके कामकाज की समीक्षा की जाएगी और उन्हें फीडबैक दिया जाएगा। माना जा रहा है कि करीब 50 फीसदी मौजूदा एआईसीसी सचिवों को उनकी मौजूदा जिम्मेदारियों से मुक्त किया जा सकता है। मंगलवार की इस बैठक का आधिकारिक एजेंडा अभी घोषित नहीं हुआ है, लेकिन इसमें प्रदर्शन और प्रस्तावित संगठनात्मक बदलावों पर चर्चा की प्रबल संभावना है। कांग्रेस में वर्तमान में 64 एआईसीसी सचिव हैं, जिनमें से अधिकांश को अलग-अलग राज्यों की जिम्मेदारी दी गई है। वे संबंधित राज्यों में एआईसीसी महासचिवों या प्रभारी नेताओं के अधीन काम करते हैं और राज्य

इकाइयों के कामकाज की निगरानी करते हैं। कुछ सचिवों को दिल्ली स्थित पार्टी के महत्वपूर्ण कार्यालयों में भी तैनात किया गया है। हालांकि, इस पूरी कवायद में उन नेताओं को भी ध्यान में रखा जाएगा जिन्हें हाल ही में संगठन सृजन अभियान के तहत नई जिम्मेदारियां दी गई हैं या संगठन में प्रमोट किया गया है।

गुरुग्राम हिट एंड रन केस की पीड़िता बोली- सिंपैथी गेम खेल रहा आरोपी

गुरुग्राम, एजेंसी।
सोमवार को एक दिल दहला देने वाली घटना सामने आई, जहां एक महिला बाइकर को कार चालक ने कथित तौर पर जानबूझकर टक्कर मार दी। इस घटना का वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल होने के बाद पीड़िता सिया ने आरोपी कल्याण बैंसला पर पलटवार किया है। सिया ने कहा कि आरोपी केवल सिंपैथी गेम खेल रहा है और उसकी जान भी जा सकती थी।

वायरल वीडियो में देखा जा सकता है कि एक तेज रफ्तार कार एक महिला बाइकर को जोरदार टक्कर मारती है, जिसके बाद महिला सड़क पर गिरकर लुढ़कती चली जाती है और उसकी बाइक काफी दूर तक घिसटती हुई जाती है, जिससे चिंगारियां निकल रही थीं। इस घटना के बाद कार चालक कल्याण बैंसला ने अपनी सफाई में जानबूझकर टक्कर मारने से इनकार किया था, जिस पर सिया ने तीखी प्रतिक्रिया दी है। सिया ने अपनी आपबीती सुनाते हुए कहा कि वायरल वीडियो में स्पष्ट दिख रहा है कि उन्हें किस तरह टक्कर मारी गई। उन्होंने बैंसला के इस दावे को खारिज किया कि उसे पता नहीं था कि बाइक एक लड़की चला रही थी। सिया ने सवाल किया, मेरे बाल इतने लंबे थे और

मैंने चोटी बनाई थी। आपने मेरा पीछा किया और बाइक रोकने को कहा, फिर कैसे नहीं पता था? उन्होंने कहा कि चाहे वे तेज चलें या धीरे, किसी को भी उनका पीछा करने का अधिकार नहीं है। पीड़िता ने गंभीर आरोप लगाते हुए कहा, अगर दो-तीन सेकंड का गैप हो जाता तो मेरी मौत हो सकती थी। मैं रोड पर गिरी थी और बाइक घिसटती चली गई। अगर आरोपी को दुख ही हो रहा था, तो वह रुका क्यों नहीं? उसकी जिम्मेदारी थी कि वह रुककर देखे कि जिसे टक्कर मारी, वह मरा या बचा। सिया ने बैंसला के सिंपैथी गेम पर कटाक्ष करते हुए कहा कि ऐसे लोग यह भी नहीं सोचते कि उनके घर में भी महिलाएं होंगी।

वहीं, आरोपी कल्याण बैंसला ने अपनी सफाई में जानबूझकर टक्कर मारने से इनकार किया है। जिम संचालक और खुद को अंतरराष्ट्रीय कबड्डी खिलाड़ी बताने वाले बैंसला ने कहा कि उसने यू-टर्न के पास कार पर से अपना नियंत्रण खो दिया था। उसने उलटा महिला बाइकर सिया और उनके साथी पर उकसाने का आरोप लगाया। बैंसला के अनुसार, वीडियो में देखिए कि कौन बार-बार बाइक तेज और धीमी कर रहे थे। उसने यह भी दावा किया कि घटनास्थल पर रुकने पर उसे डर था कि बाइक सवारों का एक समूह उसे और उसके परिवार को पीट सकता था, इसलिए वह वहां से भाग गया। विवाद के बाद आरोपी ने अपना इंस्टाग्राम अकाउंट भी बंद कर दिया।

कांग्रेस ने ममता को दिया झटका, मदद से किया इनकार

कोलकाता, एजेंसी।
पश्चिम बंगाल की राजनीति में पूर्व मुख्यमंत्री ममता बनर्जी के सामने चुनौतियां फिलहाल कम होती नहीं दिख रही हैं। खबर है कि नंदीग्राम उपचुनाव में मदद के लिए उन्होंने कांग्रेस से संपर्क साधा था, लेकिन पार्टी ने उनका प्रस्ताव मानने से साफ इनकार कर दिया है। हालांकि, इसे लेकर आधिकारिक रूप से किसी भी पार्टी ने कुछ नहीं कहा है। सूत्रों के अनुसार, ममता बनर्जी ने कांग्रेस के वरिष्ठ नेता केसी वेणुगोपाल से बात की थी। उन्होंने नंदीग्राम सीट पर कांग्रेस के लिए लड़ने का वादा करते हुए रेजीनगर सीट पर तृणमूल कांग्रेस उम्मीदवार के लिए समर्थन मांगा था। यह भी कहा गया है कि ममता ने नंदीग्राम से अपने प्रत्याशी का नाम वापस लेने की भी पेशकश की थी, जिससे संकेत मिल रहे थे कि वह कांग्रेस

के साथ गठबंधन की कोशिश में हैं। हालांकि, कांग्रेस ने इस प्रस्ताव को ठुकरा दिया। पार्टी सूत्रों ने बताया कि तृणमूल शासन में कांग्रेस कार्यकर्ताओं पर हुए कथित अत्याचारों के चलते उन्होंने यह कदम उठाया। प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष शुभांकर सरकार के मुताबिक, अगर टीएमसी गठबंधन चाहती है, तो उसे नंदीग्राम और रेजीनगर, दोनों सीटों पर होने वाले उपचुनावों में कांग्रेस का साथ देना होगा। दोनों ही सीटों पर 6 अक्टूबर को वोटिंग होगी और 9 अक्टूबर को मतगणना होगी। तृणमूल कांग्रेस ने नंदीग्राम सीट पर संचिता प्रधान डे को और रेजीनगर से रबीउल आलम चौधरी को उम्मीदवार बनाया है। खबरें हैं कि संचिता प्रधान डे की उम्मीदवारी को लेकर स्थानीय स्तर पर नाराजगी का दौर शुरू हो गया है, क्योंकि उनका नाम साल 2014 के शिक्षक भर्ती घोटाले में आया था। उधर, कांग्रेस ने रेजीनगर से मोहम्मद अब्दुल्लाहिल कफी और नंदीग्राम से मिलन प्रधान को मैदान में उतारा है।ममता बनर्जी के लिए चुनौतियां यहीं खत्म नहीं होतीं। ऋताब्रत बनर्जी की अगुवाई वाले टीएमसी के बागी गुट ने भी दोनों सीटों पर अपने उम्मीदवार खड़े किए हैं। यह गुट टीएमसी के नाम और चिह्न पर ही चुनाव लड़ने की तैयारी कर रहा है। उनकी तरफ से नंदीग्राम से मोहम्मद एतेशामुल हक और मुर्शिदाबाद की रेजीनगर सीट से सफीउज्जमां शेख मैदान में होंगे।

भारत रक्षा निर्यातक बनने की दिशा में तेजी से बढ़ रहा आगे: राजनाथ सिंह

नई दिल्ली,, एजेंसी।
भारत आज आयातक से रक्षा निर्यातक बनने की दिशा में तेजी से बढ़ रहा है। केंद्रीय रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने नई दिल्ली में आयोजित डीआरडीओ-उद्योग समन्वय बैठक 'विमर्श 2026' में यह बात कही। उन्होंने देश की रक्षा आत्मनिर्भरता के लक्ष्य को प्राप्त करने में स्टार्टअप और सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यमों (एमएसएमई) की महत्वपूर्ण भूमिका पर जोर दिया।

केंद्रीय मंत्री सिंह ने बताया कि बीते कुछ वर्षों में ये छोटे उद्यम नवाचार के नए ध्वजवाहक बनकर उभरे हैं, जो नए विचारों और नई प्रौद्योगिकियों को जन्म दे रहे हैं। रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन (डीआरडीओ) ने इनके लिए एक ऐसा ढांचा तैयार किया है, जिसके माध्यम से स्टार्टअप और एमएसएमई सीधे डीआरडीओ की प्रयोगशालाओं के साथ संवाद कर डीप टेक व विशिष्ट प्रौद्योगिकियों में काम करने का मौके प्राप्त कर सकते हैं।

केंद्रीय रक्षा मंत्री ने स्पष्ट किया कि आत्मनिर्भर भारत के लिए डीआरडीओ और उद्योगों की साझेदारी अब केवल उत्पादन तक सीमित नहीं रहनी चाहिए। इस अनुसंधान, डिजाइन, परीक्षण, प्रमाणन और विनिर्माण की पूरी श्रृंखला में बढ़ाना होगा। उन्होंने कहा कि जब डीआरडीओ का ज्ञान, उद्योग की विनिर्माण क्षमता, स्टार्टअप का नवाचार और युवाओं का नए भारत का सपना एक साथ आएंगे, तब भारत की रक्षा क्षमता को दुनिया की कोई शक्ति रोक नहीं सकती।

उन्होंने उल्लेख किया कि आज जारी की गई नई नीतियां और दिशानिर्देश उद्योग के लिए नई संभावनाएं लेकर आए हैं। इनका फोकस उद्योग के नेतृत्व वाले अनुसंधान एवं विकास, स्टार्टअप और एमएसएमई के वित्त पोषण को बढ़ावा देना है। इसके साथ ही, शिक्षा जगत और उद्योग के बीच सहयोग तथा एआई, क्वांटम कंप्यूटिंग व हाइपरसोनिक जैसी भविष्य की प्रौद्योगिकियों में निवेश पर भी जोर दिया गया है।

राजनाथ सिंह ने स्वीकार किया कि रक्षा क्षेत्र में अनुसंधान और विकास के लिए केवल सरकार या डीआरडीओ के प्रयास पर्याप्त नहीं हैं; यह एक सहयोगात्मक प्रयास है। उन्होंने कहा कि डीआरडीओ और उद्योग के बीच की यह साझेदारी ही भारत को रक्षा विनिर्माण का वैश्विक केंद्र बना सकती है। उनका मानना है कि कोई भी उत्पाद भारत में विकसित कर देना महत्वपूर्ण है, लेकिन उससे भी महत्वपूर्ण है उत्पाद बनाने की क्षमता और आत्मविश्वास विकसित करना। केंद्रीय रक्षा मंत्री ने आत्मनिर्भरता के वास्तविक अर्थ को समझाया। उन्होंने कहा कि आत्मनिर्भरता का मतलब केवल कुछ कलपुर्जे या हथियार उपकरण विकसित करना नहीं, बल्कि यह हमारे चरित्र और रवैये का हिस्सा होना चाहिए। हमारे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के दूरदर्शी नेतृत्व में, सकारात्मक स्वदेशीकरण सूची, 'मेक इन इंडिया' पहल, आईडेक्स, अदिति जैसे कार्यक्रम और रक्षा अनुसंधान एवं विकास बजट का 25

प्रतिशत निजी क्षेत्र के लिए आवंटित करने जैसे कई महत्वपूर्ण फैसले लिए गए हैं। ये कदम रक्षा क्षेत्र में आयात पर हमारी निर्भरता को कम करने और आत्मनिर्भरता की ओर बढ़ने के लिए उठाए गए हैं।

डेढ़ दिन के गणपति बप्पा को दी गई भावपूर्ण विदाई, दमण समुद्र किनारे हुआ विसर्जन

असली आजादी न्यूज नेटवर्क, दमण, 15 सितंबर। गणेशोत्सव के तहत डेढ़ दिन के लिए स्थापित किए गए भगवान गणेश की प्रतिमाओं का मंगलवार को दमण के विभिन्न समुद्र तटों पर विधिवत विसर्जन किया गया। दोपहर के बाद श्रद्धालु ढोल-नगाड़ों और जयकारों के साथ गणपति बप्पा की प्रतिमाओं को लेकर विसर्जन स्थल पहुंचे। इस दौरान वातावरण भक्तिमय नजर आया। प्रतिमा विसर्जन से पहले श्रद्धालुओं ने भगवान गणेश की पूजा-अर्चना कर आरती उतारी और परिवार की सुख-शांति, समृद्धि एवं खुशहाली की कामना की। इसके बाद गणपति बप्पा मोरया और अगले बरस तू जल्दी आ के जयघोष के साथ प्रतिमाओं को समुद्र में विसर्जित किया गया। कई स्थानों पर श्रद्धालुओं ने गुलाल उड़ाकर और नाचते-झूमते हुए बप्पा को विदाई दी। विसर्जन को लेकर प्रशासन एवं पुलिस विभाग द्वारा सुरक्षा के विशेष इंतजाम किए गए थे। समुद्र तटों पर पुलिसकर्मियों की तैनाती के साथ श्रद्धालुओं की सुविधा और भीड़ नियंत्रण पर विशेष ध्यान दिया गया। पर्यावरण संरक्षण को ध्यान में रखते हुए श्रद्धालुओं से निर्धारित स्थानों पर ही विसर्जन करने तथा समुद्र तटों को स्वच्छ रखने की अपील भी की गई। डेढ़ दिन के गणपति विसर्जन के साथ दमण में गणेशोत्सव का पहला चरण भक्तिभाव के साथ संपन्न हुआ।

प्रज्ञा संस्कृति अकादमी दमण में स्थापित गणेश प्रतिमा का हुआ विसर्जन

असली आजादी न्यूज नेटवर्क, दमण 15 सितंबर। प्रज्ञा संस्कृति अकादमी दमण में गणेश चतुर्थी के दिन श्रद्धा एवं भक्तिभाव के साथ भगवान गणेश की प्रतिमा स्थापित की गई थी। सुबह-शाम गणपति बप्पा की पूजा एवं आरती की गई। डेढ़ दिन के गणपति बप्पा का विसर्जन श्रद्धा और भक्तिभाव से किया गया। इस अवसर पर गणेश भक्तों के साथ दमण जिला भाजपा अल्पसंख्यक मोर्चा के अध्यक्ष वसीम सैय्यद भी उपस्थित रहे। गणपति बप्पा को भक्ति भाव के साथ विदाई दी गई और पूरा माहौल भक्तिमय हो उठा। गणपति बप्पा मोरया, अगले बरस जल्दी आना की कामना के साथ बप्पा को विदाई दी गई।

दमण जेटी से युवक ने नदी में लगाई छलांग, लाइफगार्ड ने बचाई जान

असली आजादी न्यूज नेटवर्क, दमण, 15 सितंबर। गणपति विसर्जन के दौरान दमण जेटी पर एक युवक द्वारा नवनिर्मित जेटी से नदी में छलांग लगाने पर अफरा-तफरी का माहौल बन गया। युवक तैरते हुए समुद्र नारायण जेटी की ओर पहुंच गया, लेकिन कुछ देर बाद वह तैरने में असमर्थ होता दिखाई दिया। मौका-ए-वारदात पर तैनात लाइफगार्ड वालंटियरों की नजर युवक पर पड़ते ही बिना समय गंवाए रेस्क्यू ऑपरेशन शुरू कर दिया। लाइफगार्ड टीम ने नाव की सहायता से युवक तक पहुंचकर उसे सुरक्षित बाहर निकाल लिया। समय रहते किए गए इस रेस्क्यू से युवक की जान बच गई। बताया जा रहा है कि युवक नेपाल का मूल निवासी है और घटना के समय वह शराब के नशे में था। गणपति विसर्जन के चलते जेटी और आसपास के क्षेत्र में लोगों की काफी भीड़ मौजूद थी। ऐसे में लाइफगार्ड की सतर्कता और त्वरित कार्रवाई बेहद महत्वपूर्ण साबित हुई। रेस्क्यू के बाद युवक को पुलिस के हवाले कर दिया गया, जिसके बाद पुलिस उसे नानी दमण पुलिस स्टेशन ले गई। लाइफगार्ड वालंटियरों की तत्परता और साहसिक कार्रवाई की मौके पर मौजूद लोगों ने सराहना की।

कचीगाम में निर्माणधीन इमारत से मिला एक युवक का शव

असली आजादी न्यूज नेटवर्क, दमण, 15 सितंबर। दमण के कचीगाम में निर्माणधीन इमारत के ग्राउंड फ्लोर से युवक का शव मिला है। पुलिस ने युवक के सिर पर चोट के निशान होन की वजह से प्रथम दृष्टि में हत्या की आशंका व्यक्त की है। कचीगाम पुलिस थाना प्रभारी अनिल टी.के. ने जानकारी देते हुए बताया कि उन्हें कचीगाम के दिनेश बार के पास निर्माणधीन 6 माले की इमारत के ग्राउंड फ्लोर पर एक युवक का शव होने की जानकारी मिली। जिस पर पुलिस ने मौके पर जाकर देखा तो एक अज्ञात युवक जिसकी उम्र करीब 30 से 35 वर्ष, का शव बरामद हुआ। मृतक के सिर पर चोट के निशान होने के कारण युवक की हत्या किए जाने की आशंका व्यक्त की गई है। पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर जांच शुरू कर दी है। शव का पोस्टमार्टम होने के बाद ही हत्या की आशंका की पुष्टि हो सकेगी। कचीगाम पुलिस मामले की जांच के साथ-साथ मृतक के परिजनों की तलाश कर रही है।

दमण के देवका बीच पर मिला अज्ञात व्यक्ति का शव,पुलिस को परिजनों की तलाश

असली आजादी न्यूज नेटवर्क, दमण, 15 सितंबर। दमण के देवका बीच के पास समुद्र के किनारे पानी में बहकर आया एक अज्ञात पुरुष का शव बरामद किया गया है। दमण पुलिस प्रशासन ने आम जनता से मृतक की पहचान करने के लिए सहयोग मांगा है। मिली जानकारी के अनुसार दिनांक 09 सितंबर को सुबह करीब 10:55 बजे नानी दमण के देवका में स्थित होटल गोल्ड बीच रिजॉर्ट के पास समुद्र तट पर एक अज्ञात व्यक्ति का शव सड़ी-गली अवस्था में मिला। सूचना मिलते ही स्थानीय पुलिस ने शव को अपने कब्जे में ले लिया है। वर्तमान में शव को आगे की आवश्यक कानूनी कार्रवाई और शिनाख्त के लिए नमो हॉस्पिटल मरवड़ के शवगृह में रखवाया गया है। पुलिस द्वारा लगातार प्रयास किए जाने के बाद भी अभी तक मृतक की पहचान नहीं हो पाई है। यदि किसी को अज्ञात मृतक युवक के बारे में कोई जानकारी या सगे-संबंधी के बारे में कुछ पता चले तो कोस्टल पुलिस स्टेशन के लैंडलाइन नंबर (0260) 2220333 एवं दमण पुलिस कंट्रोल रूम नं. (0260) 2220102 और जांच अधिकारी के मोबाइल नं. 7698270343 पर संपर्क करें।

REQUIRED

ACCOUNANT & ADMIN ASSISTANT
ROLE: ACCOUNTANT / OFFICE ADMIN
REQUIREMENTS: GOOD COMPUTER SKILLS, PROFICIENT IN TALLY SOFTWARE
QUALIFICATION: GRADUATE FROM ANY STREAM (BA, B.COM, B.SC, BBA, ETC.) OR RELEVANT STUDY
Contact: **NAIK AND ASSOCIATES**
(9825140618, naikandassociate@yahoo.co.in)

CHANGE OF NAME

I, **KAMLESH BHIKHA KAPADIA,** CHANGE MY BIRTH DATE AS BELOW: OLD BIRTH DATE: 10/12/1977 **NEW BIRTH DATE: 25/12/1977** ADDRESS: H. NO.1572, CHORO MITHABAWA, P D GHOGHLA, DIU, DAMAN & DIU

CHANGE OF NAME

I HAVE CHANGE OF MY NAME FROM FAILSIYA WILSON NATHAN TO **NEW NAME FELCIA WILSON NATHAN.** ADD. : FLAT NO. 203, REBELLO COMPLEX, OPP ADIVASI BHAVAN, SILVASSA- 396230, UT OF DNH&DD

CHANGE OF NAME

I HAVE CHANGED MY NAME FROM PANCHAL BINDUBEN D. TO **BINDUBEN DHANSUKHLAL PANCHAL** ADDRESS: - FLAT NO. 206, 2ND FLOOR., KRUPALU BUILDING, CROSS LANE-7 , DILIP NAGAR, NANI DAMAN-396210.

CHANGE OF NAME

I HAVE CHANGE OF MY NAME FROM RAKESH MADHUBHAI PATEL TO **NEW NAME RAKESH PATEL** ADD. : H NO. 27, FAD PADA, OPP SSR COLLEGE, SAYLI, SILVASSA- 396230, UT OF DNH&DD

गवर्नमेंट पॉलिटेक्निक, वरकुंड, नानी दमन - 396210

https://ddd.gov.in/

सरकारी पॉलिटेक्निक, दमन में प्लास्टिक इंजीनियरिंग के लेक्चरर के 01 पद पर छह महीने की अवधि के लिए 'शॉर्ट टर्म कॉन्ट्रैक्ट (अल्पकालिक अनुबंध) के आधार पर भर्ती की जानी है, जिसका विवरण इस प्रकार है: -
प्लास्टिक इंजीनियरिंग के लेक्चरर के 01 पद पर भर्ती
सं.39.1-ईएसटी-जीपी(वॉल्यूम3)/2026-27/658
दिनांक: 15/09/2026
शुरु होने की तारीख: 16/09/2026
अंतिम तिथि: 15/10/2026

Dtd: 15/9/2026
No: IP/DMN/25/2026-27/492

Bharatgas
भारत पेट्रोलियम
COOK FOOD. SERVE LOVE.

Bharat Petroleum
सी. पी. गैस सर्विस
भारत गैस डीलर

फॉर्म नं-4 के साथ निम्नलिखित दस्तावेज जमा किजिये: -
1. बैंक पास बुक के पहले पन्ने की कॉपी या केंसल्ड चेक
2. एल.पी.जी. आई.डी. के साथ पहले पन्ने की फोटो कॉपी
3. गैस बुक के पहले पन्ने की फोटो कॉपी
पता:- G/5, सांई निवास, ए विंग, सांईकृपा -4, मशालचौक, एयरपोर्ट रोड, नानी दमण.

With best compliments from

V.K. INDUSTRIES

Survey no. 227, Ajaran Falia,
Village Kachigam, Daman-396210.

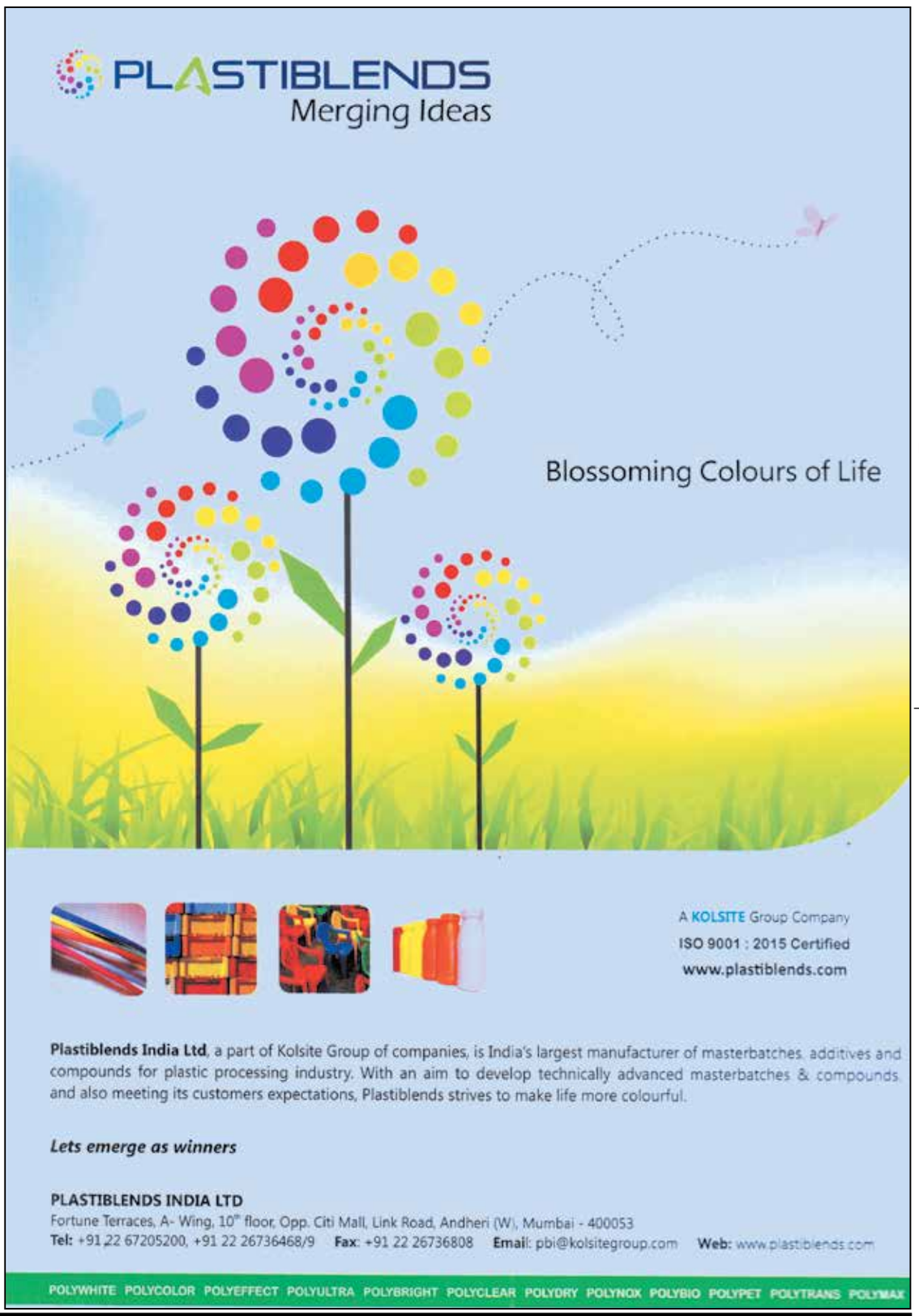

आतंकी मसूद पर पाकिस्तान की नई नौटंकी

सुरेश हिंदुस्तानी

आतंकवाद के विरुद्ध लड़ाई में अब दुनिया को दावों की नहीं, कार्रवाई की भाषा चाहिए। पाकिस्तान यदि वास्तव में अपनी छवि बदलना चाहता है तो उसे नौटंकी से आगे बढ़कर प्रमाण प्रस्तुत करने होंगे। क्योंकि आतंकवाद के सवाल पर अंतरराष्ट्रीय समुदाय की स्मृति अब इतनी कमजोर नहीं रही कि पुरानी चालें नए आवरण में आसानी से सफल हो जाएं।

आतंकवाद के प्रश्न पर पाकिस्तान की भूमिका लंबे समय से विश्व समुदाय के लिए चिंता का विषय रही है। आतंकवाद के विरुद्ध कठोर कार्रवाई का दिखावा और आतंकी संगठनों के प्रति नरम रवैया, पाकिस्तान की विदेश एवं सुरक्षा नीति के इस विरोधाभासी चरित्र ने उसकी विश्वसनीयता को लगातार कठघरे में खड़ा किया है। आतंकी सरगना मसूद अजहर को लेकर पाकिस्तान की हालिया कार्रवाई भी इसी विरोधाभास की एक नई कड़ी के रूप में देखी जा रही है। उसे भगोड़ा घोषित करना और उसकी गिरफ्तारी पर इनाम की घोषणा करना पहली दृष्टि में कठोर कार्रवाई का संकेत देता है, लेकिन पाकिस्तान के पिछले रिकॉर्ड को देखते हुए इसके पीछे की वास्तविक मंशा पर प्रश्न उठना स्वाभाविक है।

मसूद अजहर कोई सामान्य अपराधी नहीं है। वह भारत में हुए अनेक आतंकी हमलों से जुड़े उन कुख्यात चेहरों में रहा है, जिनकी गतिविधियों ने न केवल भारत की सुरक्षा को चुनौती दी, बल्कि दक्षिण एशिया में आतंकवाद के नेटवर्क की भयावहता को भी उजागर किया। वर्ष 1999 में इंडियन एयरलाइंस के विमान के अपहरण के बाद यात्रियों की रिहाई के बदले भारत को जिन आतंकवादियों को छोड़ना पड़ा, उनमें मसूद अजहर भी शामिल था। इसके बाद उसने आतंकवादी गतिविधियों के जिस नेटवर्क को आगे बढ़ाया, उसने भारत की सुरक्षा व्यवस्था के सामने गंभीर चुनौतियां खड़ी कीं।

विडंबना यह है कि जिस व्यक्ति को भारत लंबे समय से आतंकवाद का प्रमुख चेहरा मानता रहा है, उसी मसूद अजहर को लेकर पाकिस्तान अब यह दावा कर रहा है कि वह उसकी पकड़ से बाहर है और संभवतः अफगानिस्तान में छिपा हुआ है। यदि यह दावा सही है तो सवाल यह उठता है कि पाकिस्तान की सुरक्षा और खुफिया एजेंसियां इतने कुख्यात आतंकी के संबंध में इतनी अनभिज्ञ कैसे हो सकती हैं? और यदि वह पाकिस्तान से बाहर है तो उसके संगठनात्मक नेटवर्क, आर्थिक संसाधनों और संपर्कों पर कार्रवाई क्यों दिखाई नहीं देती?

यहीं से पाकिस्तान की कार्रवाई पर संदेह की परतें गहरी होने लगती हैं।

पाकिस्तान की जांच एजेंसी एफआईए द्वारा मसूद अजहर को अपने अत्यंत खतरनाक आतंकवादियों की सूची में शामिल किया जाना अपने आप में महत्वपूर्ण घटनाक्रम है। लेकिन केवल किसी आतंकी को सूचीबद्ध कर देना आतंकवाद के विरुद्ध निर्णायक कार्रवाई नहीं माना जा

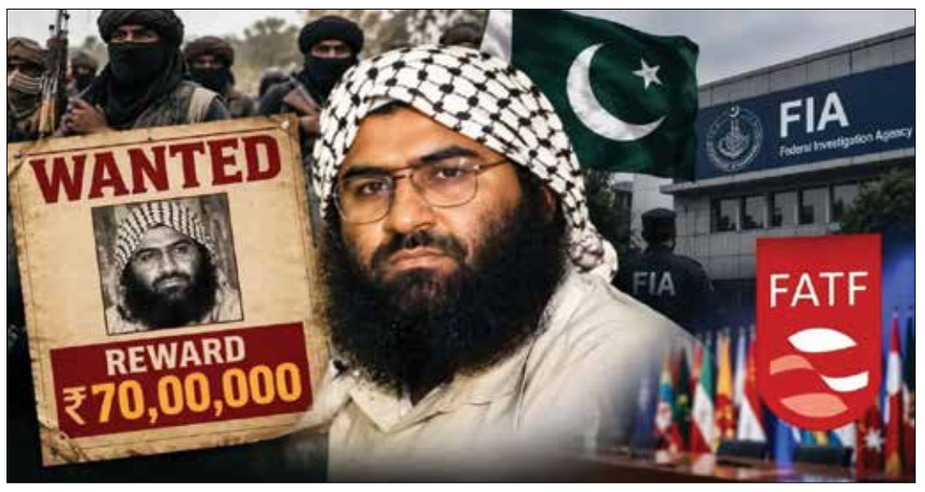

सकता। असली कसौटी गिरफ्तारी, न्यायिक प्रक्रिया, आतंकी नेटवर्क का विघटन और उसके वित्तीय स्रोतों पर प्रभावी प्रहार है। यदि कार्रवाई केवल कागजों तक सीमित रह जाए, तो वह आतंकवाद के विरुद्ध संघर्ष नहीं, बल्कि अंतरराष्ट्रीय दबाव को टालने की प्रशासनिक कवायद बनकर रह जाती है।

भारत के सुरक्षा तंत्र से जुड़े इनपुट यदि यह संकेत देते हैं कि मसूद अजहर पाकिस्तान में ही छिपा हुआ है, तो पाकिस्तान के दावे की विश्वसनीयता और भी संदिग्ध हो जाती है। हालांकि ऐसे खुफिया दावों की स्वतंत्र पुष्टि आवश्यक होती है, लेकिन पाकिस्तान का अतीत उसके वर्तमान दावों पर सहज विश्वास करने की अनुमति नहीं देता।

पाकिस्तान का यह दोहरा चरित्र नया नहीं है। दुनिया पहले भी देख चुकी है कि आतंकवाद के विरुद्ध कार्रवाई का दावा करने वाला पाकिस्तान अपनी ही धरती पर छिपे कुख्यात आतंकवादियों की मौजूदगी से लंबे समय तक इनकार करता रहा। ओसामा बिन लादेन का पाकिस्तान में पाया जाना इस संदर्भ में सबसे चर्चित उदाहरण है। अमेरिकी कार्रवाई में एबटाबाद में लादेन के मारे जाने के बाद पाकिस्तान के उन दावों की विश्वसनीयता पर गंभीर प्रश्न उठे थे, जिनमें वह अपनी धरती पर आतंकवादी सरगनाओं की मौजूदगी से अनभिज्ञता जताता रहा था।

आतंकी मसूद अजहर पर पाकिस्तान सरकार की कार्यवाही को इसलिए भी संदेह की दृष्टि से देखा जा रहा है, क्योंकि पाकिस्तान में आतंकी सरगनाओं पर न तो सरकार का नियंत्रण है और न ही सेना की ही चलती है। आतंकियों का अपना एक तंत्र है। जिनमें कोई भी दखल नहीं दे सकता। पाकिस्तान में तीन शक्ति केंद्र माने जाते हैं, जिनमें सरकार, सेना और आतंकवादी हैं। कई बार यह भी देखने में आता है कि वहां की सरकार किसकी होगी, यह आतंकी और सेना तय करती है। इसलिए सरकार, आतंकियों पर कठोर कार्यवाही करने का सामर्थ्य नहीं जुटा पाती। और आतंकी फलीभूत होते रहते हैं।

इस पृष्ठभूमि में मसूद अजहर पर घोषित इनाम को केवल कानून-व्यवस्था की कार्रवाई के रूप में देखना कठिन है। इसके पीछे पाकिस्तान की अंतरराष्ट्रीय छवि सुधारने की मंशा भी दिखाई देती है। विशेषकर आतंकवाद के वित्तपोषण और धनशोधन से जुड़े अंतरराष्ट्रीय मानकों के संदर्भ में पाकिस्तान पर लगातार दबाव रहा है। ऐसे समय में किसी कुख्यात आतंकी के विरुद्ध सार्वजनिक कार्रवाई का प्रदर्शन अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं को यह संदेश देने का प्रयास हो सकता है कि पाकिस्तान आतंकवाद के विरुद्ध सक्रिय है। लेकिन आज विश्व पहले की तुलना में कहीं अधिक सतर्क है। आतंकवाद के विरुद्ध संघर्ष में अब केवल घोषणाएं पर्याप्त नहीं हैं। अंतरराष्ट्रीय समुदाय यह देखता है कि आतंकवादी संगठनों की वित्तीय धमनियां कितनी प्रभावी ढंग से रोकी गईं, उनके प्रशिक्षण शिविरों और नेटवर्क पर क्या कार्रवाई हुई, आतंकी सरगनाओं को न्याय के कठघरे में कब लाया गया और आतंकवाद को संरक्षण देने वाली संरचनाओं को कितना ध्वस्त किया गया।

पाकिस्तान की आर्थिक स्थिति भी उसके लिए एक बड़ी चुनौती है। विदेशी सहायता, ऋण और अंतरराष्ट्रीय वित्तीय संस्थाओं से मिलने वाली आर्थिक सहायता उसके लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। ऐसे में आतंकवाद के वित्तपोषण को लेकर अंतरराष्ट्रीय दबाव उसके आर्थिक हितों से सीधे जुड़ जाता है। यदि पाकिस्तान आतंकवाद पर प्रभावी कार्रवाई करने में विफल रहता है तो उस पर आर्थिक एवं वित्तीय प्रतिबंधों का दबाव बढ़ सकता है। इसलिए उसके द्वारा की जाने वाली प्रत्येक कार्रवाई को उसके आर्थिक और कूटनीतिक संदर्भ में भी परखना आवश्यक है।

भारत के लिए यह समय पाकिस्तान के किसी भी दावे से प्रभावित होने के बजाय तथ्यों, प्रमाणों और अंतरराष्ट्रीय सहयोग के आधार पर अपनी आतंकवाद विरोधी नीति को और सुदृढ़ करने का है। आतंकवाद किसी एक देश की समस्या नहीं है। यह वैश्विक शांति, लोकतांत्रिक संस्थाओं और मानव सभ्यता के लिए चुनौती है। इसलिए आतंकवाद को संरक्षण देने वाली किसी भी व्यवस्था के प्रति अंतरराष्ट्रीय समुदाय को शून्य-सहनशीलता की नीति अपनानी होगी।

मसूद अजहर पर इनाम की घोषणा यदि वास्तविक कार्रवाई की दिशा में पहला कदम है तो पाकिस्तान को उसे प्रमाणित करने में देर नहीं करनी चाहिए। उसे चाहिए कि वह मसूद अजहर की वास्तविक स्थिति स्पष्ट करे, यदि वह पाकिस्तान में है तो उसे गिरफ्तार करे, उसके नेटवर्क को ध्वस्त करे और उसके विरुद्ध पारदर्शी न्यायिक कार्रवाई सुनिश्चित करे। अन्यथा यह कार्रवाई भी पाकिस्तान की उन अनेक घोषणाओं की सूची में जुड़ जाएगी, जिनमें शब्द बहुत थे, लेकिन परिणाम नगण्य।

आतंकवाद के विरुद्ध लड़ाई में अब दुनिया को दावों की नहीं, कार्रवाई की भाषा चाहिए। पाकिस्तान यदि वास्तव में अपनी छवि बदलना चाहता है तो उसे नौटंकी से आगे बढ़कर प्रमाण प्रस्तुत करने होंगे। क्योंकि आतंकवाद के सवाल पर अंतरराष्ट्रीय समुदाय की स्मृति अब इतनी कमजोर नहीं रही कि पुरानी चालें नए आवरण में आसानी से सफल हो जाएं।

(यह लेखक के व्यक्तिगत विचार हैं इससे संपादक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है)

संपादकीय

हिमालयी पानी बम

नेपाल की प्रलयंकारी बाढ़ ने हिमालयी सीमा में बसे देशों की सरकारों को ग्लोबल वार्मिंग से निरंतर बनती हिमनद झीलों के भयावह खतरों के प्रति सचेत किया है। यह संकट एक देश की सीमाओं से परे पूरे हिमालयी क्षेत्रों में व्याप्त है। ऐसे में निगरानी तंत्र को मजबूत करने और इसके दायरे में आने वाले देशों, राज्यों और शहरों को समय रहते सूचना देने के लिए एक प्रभावी सिस्टम विकसित करने की सख्त जरूरत महसूस की जा रही है। साल 2013 में केदारनाथ त्रासदी से उपजी तबाही की तस्वीरें आज भी भारतीय जनमानस की स्मृतियों में ताजा हैं। पूर्वी हिमालय स्थित सिक्किम में भी चालीस हिमनद झीलों का पता चला है। चिंता की बात यह है कि इसमें से सोलह को अधिक जोखिम वाली श्रेणी में रखा गया है। इसी तरह हिमाचल प्रदेश में आईआईटी मंडी के एक अध्ययन में लगातार विस्तार ले रही नौ ग्लेशियर झीलों की पहचान की गई थी। कमोबेश उत्तराखंड में भी ऐसी ही स्थिति बनी हुई है जो जलवायु परिवर्तन के चलते तेजी से पिघलते ग्लेशियरों से उपजे संकट की ओर ध्यान खींचती हैं। आईआईटी के अध्ययन के जरिये तीन हजार पांच सौ मीटर से ज्यादा ऊंचाइयों पर दो हजार से अधिक झीलों का पता चला है। बताया जाता है कि ये झीलें तेजी से बन रही हैं और इनकी संख्या एक दशक पहले की तुलना में 710 अधिक हो गई है। इनका क्षेत्रफल भी लगातार बढ़ रहा है। यह वृद्धि 28 फीसदी बढ़ी बतायी जाती है, जिसके चलते कई रिहायशी इलाकों, शिक्षण संस्थाओं, स्वास्थ्य सुविधाओं और अनेक पुलों पर खतरा मंडरा रहा है। ग्लेशियर टूटने और चट्टानें खिसकने से ये झीलें कितना भयावह रूप ले सकती हैं, उसकी बानगी 26 अगस्त को नेपाल में हुई तबाही में नजर आई है। वहां आज भी हजारों लोग लापता हैं। चट्टानों, पानी, कीचड़ आदि का जो सैलाब घाटियों से गुजरा है, उसने बस्तियों और बुनियादी ढांचे को भारी नुकसान पहुंचाया है। पनबिजली परियोजनाओं की सुरंगों में फंसे लोगों की अभी भी तलाश जारी है। नेपाल हादसे ने पूरी दुनिया का ध्यान खींचा है और बताया है कि ऊंचाई वाली जगहों में झील में बर्फ-चट्टानों के गिरने के बाद इन झीलों को रोकने वाले अवरोध टूटते हैं, जिससे नीचे वाले इलाकों में बेहद तीव्र गति से तबाही आ सकती है। दरअसल, लगातार गर्म होते हिमालय में ग्लेशियरों का पीछे हटना, झीलों का बढ़ना, भूस्खलन और अतिवृष्टि की घटनाएं आपस में मिलकर भयावह स्थिति पैदा करती हैं, जिसका मुकाबला सामान्य आपदा प्रबंधन के उपायों से नहीं किया जा सकता। निस्संदेह, लाखों लोगों का जीवन सुरक्षित करने के लिए ग्लेशियर झीलों के फटने का इंतजार नहीं किया जा सकता। जमीनी स्तर पर निगरानी के साथ ही उपग्रहों के जरिये भी इन झीलों पर नजर रखने की सख्त जरूरत है। रियल-टाइम अर्ली वॉर्निंग सिस्टम को मजबूत करने की आवश्यकता है। इसके अलावा निकासी रास्तों को चिन्हित करने की जरूरत भी है। नीचे नदियों के किनारे बसी बस्तियों व मैदानी इलाकों में बचाव के तौर-तरीकों का नियमित अभ्यास किया जाना चाहिए। इसके साथ ही पुलों, पनबिजली परियोजनाओं और अन्य बुनियादी ढांचों की जांच करके उन्हें अधिक सुरक्षित बनाने की भी जरूरत है। साथ ही इन से जुड़े संभावित खतरों का समय रहते मूल्यांकन किया जाना चाहिए। हिमालयी क्षेत्रों में विकास के नये मॉडल पर भी विचार करने की जरूरत है, जो हिमालयी क्षेत्रों की संवेदनशीलता के अनुरूप हो। इसके लिये जरूरी है कि हिमालयी क्षेत्रों में ऊंचाई वाले संवेदनशील इलाकों में पर्यटन, सड़क और निर्माण कार्यों में पर्यावरण संरक्षण को प्राथमिकता दी जाए। निस्संदेह, जोखिम वाली घाटियों में जितना कम इंफ्रास्ट्रक्चर बनाया जाएगा, किसी प्राकृतिक आपदा में जनधन की हानि उतनी ही कम होगी।

चिंतन-मनन

कैंची काटती है, सुई जोड़ती है

कैंची काटती (तोड़ती) है और सुई जोड़ती है। यही कारण है कि तोड़ने वाली कैंची पैर के नीचे पड़ी रहती है और जोड़ने वाली सुई सिर पर स्थान पाती है। इसलिए मनुष्य का यही धर्म है कि इनसान को जोड़े न कि तोड़े। उन्होंने सास-बहू में एका होने का आह्वान भी किया। राष्ट्र संत तरुण सागर महाराज ने कई उदाहरणों के माध्यम से अपनी बातें रखीं। एक पिता अपने छोटे से पुत्र को विश्व का एक नक्शा देता है। फिर उसे टुकड़े-टुकड़े कर पुत्र को जोड़ने के लिए कहता है। पुत्र उस नक्शे को ज्यों का त्यों जोड़ देता है। अपने बेटे की प्रतिभा से आश्चर्यचकित पिता पूछता है कि बेटे तुमने यह असंभव कार्य कैसे कर लिया। बेटा कहता है कि पिताजी, नक्शा के पीछे इनसान बना हुआ था। मैंने इनसान को जोड़ा तो नक्शा भी ज्यों का त्यों जुड़ गया। मुनिश्री ने कहा कि इनसान को जोड़ने से पूरा विश्व एक हो सकता है। हे मानव 36 का आँकड़ा बहुत बना लिए, अब 63 का आँकड़ा बनाइए। बुजुर्गों के अनुभव का बखान करते हुए मुनिश्री ने कहा कि बुजुर्ग की एक-एक झुर्री पर एक-एक शास्त्र का ज्ञान लिखा होता है। बुजुर्ग की अवहेलना मत करिए। वे जो कह रहे हैं, उसे सुनो। उल्टा जवाब मत दो। जवाब दोगे तो घर का माहौल खराब हो जाएगा। झगड़ा, क्लेश व द्वेष फैलेगा। बुजुर्गों का सम्मान करना सीखो। आज जो बुजुर्गों के साथ करोगे, वहीं तुम्हारे साथ होगा।

विश्व ओजोन दिवस : पृथ्वी के सुरक्षा कवच का संरक्षण

सुनील कुमार महला

ओजोन परत नीले ग्रह यानी कि हमारी पृथ्वी के लिए एक प्राकृतिक सुरक्षा कवच है। यह वह परत है जो, सूर्य से आने वाली हानिकारक पराबैंगनी (यूवी) किरणों के बड़े हिस्से को अवशोषित कर उन्हें पृथ्वी की सतह तक सीधे पहुंचने से रोकती है। वास्तव में, विशेष रूप से यूवी-बी और यूवी-सी किरणों का अधिकांश भाग ओजोन परत द्वारा अवशोषित कर लिया जाता है। इससे मनुष्यों, पशु-पक्षियों, वनस्पतियों और समस्त जीव-जगत की रक्षा होती है। यदि ये किरणें अधिक मात्रा में पृथ्वी तक पहुंचें तो त्वचा कैंसर, आंखों को नुकसान, कोशिकाओं पर प्रतिकूल प्रभाव, फसलों को क्षति तथा समुद्री खाद्य श्रृंखला पर गंभीर असर पड़ सकता है। इसलिए ओजोन परत का संरक्षण पृथ्वी पर जीवन की सुरक्षा के लिए अत्यंत आवश्यक है।

यहां पाठकों को बताता चलूं कि हर वर्ष 16 सितंबर को विश्व ओजोन दिवस मनाया जाता है। वर्ष 2026 की थीम है-ह्यशीतित ग्रह के लिए वैश्विक कार्रवाई : मॉन्ट्रियल प्रोटोकॉल के किगाली संशोधन के तहत सतत शीतलन के 10 वर्ष पूरे होने का जश्न।ह्व इस थीम का उद्देश्य ओजोन परत के संरक्षण के साथ-साथ पर्यावरण के अनुकूल और ऊर्जा-कुशल शीतलन तकनीकों को बढ़ावा देना है।

बहरहाल, यहां पाठकों को जानकारी देता चलूं कि मानव की अनियंत्रित और स्वार्थी गतिविधियों ने कभी जीवनदायिनी ओजोन परत को गंभीर संकट में डाल दिया था। दरअसल, 1980 के दशक में एयर कंडीशनर, रेफ्रिजरेटर और एरोसोल स्प्रे में बड़े पैमाने पर इस्तेमाल होने वाले क्लोरोफ्लोरोकार्बन (सीएफसी) और हैलोन जैसी गैसें समताप मंडल (स्ट्रैटोस्फियर) में पहुंचकर ओजोन अणुओं को तेजी से नष्ट करने लगीं। इसके परिणामस्वरूप, अंटार्कटिका के ऊपर एक विशाल ह्यओजोन छिद्रह्व विकसित हुआ। समय रहते कदम नहीं उठाए जाते तो सूर्य की हानिकारक पराबैंगनी (यूवी-बी) किरणों का बढ़ा हुआ प्रभाव त्वचा कैंसर, मोतियाबिंद, फसलों को नुकसान और समुद्री खाद्य श्रृंखला के लिए गंभीर खतरा पैदा कर सकता था।

ओजोन परत को नुकसान पहुंचाने वाले प्रमुख रसायनों में क्लोरोफ्लोरोकार्बन (सीएफसी), हैलोन, कार्बन टेट्राक्लोराइड और मिथाइल क्लोरोफॉर्म आदि शामिल हैं। इनका उपयोग पहले रेफ्रिजरेटर, एयर कंडीशनर, अग्निशामक यंत्र और एरोसोल जैसे उत्पादों में होता था। इन रसायनों को नियंत्रित करने के लिए वर्ष 1987 में मॉन्ट्रियल प्रोटोकॉल अपनाया गया, जिसे पर्यावरण संरक्षण की दिशा में दुनिया के सबसे सफल अंतरराष्ट्रीय समझौतों में माना जाता है। सरल शब्दों में कहें तो मॉन्ट्रियल प्रोटोकॉल का मुख्य उद्देश्य ओजोन परत को नुकसान पहुंचाने वाले रसायनों, जैसे क्लोरोफ्लोरोकार्बन (सीएफसीज), के उत्पादन और उपयोग को चरणबद्ध तरीके से कम करना और समाप्त करना है।भारत भी मॉन्ट्रियल प्रोटोकॉल के कार्यान्वयन में सक्रिय भूमिका निभा रहा है। फिर भी ओजोन परत की सुरक्षा के लिए निरंतर प्रयास जरूरी हैं। यह केवल पर्यावरण का विषय नहीं, बल्कि मानव स्वास्थ्य और पृथ्वी पर जीवन की सुरक्षा से जुड़ा प्रश्न है। इसलिए पर्यावरण के अनुकूल शीतलन तकनीकों को अपनाना और ओजोन-क्षयकारी पदार्थों के उपयोग को कम करना हमारी सामूहिक जिम्मेदारी है।इसके बाद, वर्ष 2016 में किगाली संशोधन अपनाया गया, जिसके तहत हाइड्रोफ्लोरोकार्बन (एचएफसी) के उपयोग को धीरे-धीरे कम करने का लक्ष्य रखा गया। उल्लेखनीय है कि मॉन्ट्रियल प्रोटोकॉल के कड़े अनुपालन से ओजोन-क्षयकारी गैसों के वैश्विक उत्सर्जन में लगभग 99 प्रतिशत तक की कमी आई है। इसके सकारात्मक परिणाम अब आंकड़ों में भी दिखाई दे रहे हैं। नासा और विश्व मौसम विज्ञान संगठन (डब्ल्यूएमओ) के वैज्ञानिक आकलनों के अनुसार, अंटार्कटिक ओजोन छिद्र का अधिकतम आकार अब लगभग 22.8 मिलियन वर्ग किलोमीटर के दायरे में रह गया है, जो वर्ष 2000 के 28.4 मिलियन वर्ग किलोमीटर के रिकॉर्ड स्तर से काफी कम है। वैज्ञानिकों का अनुमान है कि यदि मौजूदा नियमों का सख्ती से पालन जारी रहा तो दुनिया के अधिकांश हिस्सों में ओजोन परत 2040 तक, आर्कटिक में 2045 तक और अंटार्कटिका के ऊपर 2066 तक वर्ष 1980 के ऐतिहासिक स्तर पर लौट सकती है।हालांकि, पर्यावरण को लेकर पूरी तरह निश्चिंत होने का समय अभी नहीं आया है। जंगलों की भीषण आग, अनियंत्रित रॉकेट प्रक्षेपण, अप्रतिबंधित औद्योगिक रसायनों, जैसे डाइक्लोरोमीथेन, और लगातार बढ़ता कार्बन उत्सर्जन नई चुनौतियां पैदा कर रहे हैं। जंगलों की आग से उठने वाला रासायनिक धुआं तथा अंतरिक्ष मलबे के ऊपरी वायुमंडल में जलने से उत्पन्न एरोसोल ओजोन की रिकवरी की गति को प्रभावित कर सकते हैं। इसके अलावा, तेजी से बढ़ते अंतरिक्ष अभियानों, रॉकेट प्रक्षेपणों और समताप मंडल में उड़ने वाले विमानों से निकलने वाले ब्लैक कार्बन और कालिख को लेकर भी गंभीरता से विचार करने की आवश्यकता है।

मानसिक स्वास्थ्य की पहली चौखट बनता एआई

डॉ. प्रियंका सौरभ

मसुलभता बढ़ाने की क्षमता के साथ गोपनीयता, गलत सलाह और मानवीय संवेदना की चुनौती...

मानसिक स्वास्थ्य से जुड़ी परेशानियों के बीच अब कृत्रिम बुद्धिमत्ता यानी एआई आधारित चैटबॉट लोगों के लिए तेजी से संपर्क का पहला माध्यम बनते जा रहे हैं। अकेलापन, चिंता, तनाव, अवसाद, रिश्तों की उलझन या भावनात्मक संकट के क्षणों में कई लोग पहले किसी चिकित्सक के पास जाने के बजाय एआई से बातचीत करना पसंद कर रहे हैं। भारत जैसे विशाल और विविधतापूर्ण देश में, जहां मानसिक स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुंच अभी भी असमान है, एआई तकनीक एक नई संभावना प्रस्तुत करती है। हालांकि, यह समझना आवश्यक है कि एआई मानसिक स्वास्थ्य सेवाओं का विस्तार करने का माध्यम हो सकता है, उनका विकल्प नहीं।

भारत में मानसिक स्वास्थ्य सेवाओं की सबसे बड़ी चुनौतियों में प्रशिक्षित विशेषज्ञों की सीमित उपलब्धता, ग्रामीण और दूरदराज क्षेत्रों में सेवाओं का अभाव, उपचार की लागत तथा मानसिक बीमारी से जुड़ा सामाजिक कलंक शामिल हैं। ऐसे वातावरण में एआई की चौबीसों घंटे उपलब्धता महत्वपूर्ण अवसर पैदा करती है। व्यक्ति जब चाहे अपनी समस्या साझा कर सकता है और प्रारंभिक स्तर पर जानकारी, भावनात्मक सहारा तथा स्व-सहायता संबंधी सुझाव प्राप्त कर सकता है। एआई आधारित डिजिटल मानसिक स्वास्थ्य प्लेटफॉर्म इस दिशा में उपयोगी भूमिका निभा सकते हैं।

मानसिक स्वास्थ्य से जुड़ी समस्याओं के प्रति सामाजिक झिझक भी एआई के उपयोग को बढ़ावा दे सकती है। अनेक लोग परिवार, मित्र या चिकित्सक के सामने अपनी भावनाएं व्यक्त करने में संकोच करते हैं। अपेक्षाकृत गुमनाम डिजिटल बातचीत उन्हें अपनी चिंता, डर और परेशानियों को शब्द देने का अवसर देती है। इस प्रकार चैटबॉट मानसिक स्वास्थ्य संबंधी संवाद की पहली सीढ़ी बन सकते हैं और व्यक्ति को आवश्यकता होने पर आगे पेशेवर सहायता लेने के लिए प्रेरित कर सकते हैं।

एआई का एक महत्वपूर्ण लाभ शुरूआती स्क्रीनिंग में भी है। व्यक्ति के संवाद, व्यवहार और कुछ डिजिटल संकेतों का विश्लेषण करके एआई संभावित चिंता, अवसाद या अन्य मानसिक स्वास्थ्य संबंधी जोखिमों की पहचान में सहायता कर सकता है। हालांकि ऐसी स्क्रीनिंग को अंतिम चिकित्सकीय निदान नहीं माना जाना चाहिए। इसका उद्देश्य केवल संभावित जोखिम को पहचानकर व्यक्ति को उचित विशेषज्ञ तक पहुंचाने में सहायता करना होना चाहिए।

भारत की भाषाई विविधता को देखते हुए बहुभाषी एआई तकनीक भी विशेष महत्व रखती है। यदि मानसिक स्वास्थ्य संबंधी जानकारी और प्रारंभिक सहायता केवल अंग्रेजी या कुछ सीमित भाषाओं तक रहेगी, तो बड़ी आबादी इससे बाहर रह जाएगी। भाषा-तकनीक और भारतीय भाषाओं के लिए विकसित डिजिटल प्रणालियां इस अंतर को कम कर सकती हैं। भविष्य में ऐसी सेवाओं को टेली-मानस जैसी सरकारी मानसिक स्वास्थ्य पहलों के साथ जोड़कर दूरदराज के क्षेत्रों तक प्रारंभिक सहायता पहुंचाई जा सकती है।

व्यक्तिगत सहायता भी एआई की एक उपयोगी विशेषता हो सकती है। दवा लेने की याद दिलाना, नींद और दिनचर्या पर ध्यान देने के लिए प्रेरित करना, तनाव कम करने के अभ्यास सुझाना या संज्ञानात्मक व्यवहार चिकित्सा आधारित संरचित स्व-सहायता गतिविधियों में मार्गदर्शन देना कुछ ऐसे क्षेत्र हैं, जहां एआई सहयोगी भूमिका निभा सकता है। चिकित्सकों के लिए भी एआई मरीजों की नियमित निगरानी, जोखिम वाले मामलों की पहचान और प्राथमिकता तय करने में सहायक हो सकता है। इससे सीमित मानव संसाधनों का अधिक प्रभावी उपयोग संभव हो सकता है।

लेकिन अवसरों के साथ जोखिम भी गंभीर हैं। भावनात्मक संकट में व्यक्ति अत्यधिक संवेदनशील स्थिति में होता है। यदि एआई गलत, अधूरी या संदर्भहीन जानकारी देता है तो वह व्यक्ति की समस्या को और बढ़ा सकता है। किसी नकारात्मक या भ्रमपूर्ण धारणा को चुनौती देने के बजाय चैटबॉट अनजाने में उसे मजबूत कर दे, तो परिणाम गंभीर हो सकते हैं। यही कारण है कि मानसिक स्वास्थ्य से जुड़े एआई सिस्टम में सामान्य सूचना देने वाले चैटबॉट और चिकित्सकीय सहायता देने वाले प्रमाणित उपकरणों के बीच स्पष्ट अंतर होना चाहिए।

सबसे बड़ा खतरा तब पैदा होता है जब व्यक्ति एआई को वास्तविक चिकित्सक का विकल्प समझने लगता है। लगातार बातचीत के कारण भावनात्मक निर्भरता भी विकसित हो सकती है। व्यक्ति यह मान सकता है कि मशीन उसकी भावनाओं को पूरी तरह समझती है, जबकि एआई के पास मानवीय अनुभव, नैतिक निर्णय, नैदानिक विवेक और वास्तविक सामाजिक संदर्भ को समझने की सीमाएं हैं।

आत्महत्या या आत्महानि जैसे संकटपूर्ण मामलों में यह सीमा और अधिक गंभीर हो जाती है। व्यक्ति हमेशा सीधे शब्दों में अपनी स्थिति व्यक्त नहीं करता। उसके संकेत अप्रत्यक्ष, अस्पष्ट या सांस्कृतिक संदर्भों में छिपे हो सकते हैं। यदि एआई ऐसी चेतावनियों को पहचानने में विफल रहता है या समय पर मानवीय सहायता से नहीं जोड़ता, तो नुकसान की संभावना बढ़ जाती है। इसलिए उच्च जोखिम वाले मामलों में चैटबॉट को बातचीत जारी रखने के बजाय प्रशिक्षित व्यक्ति, हेल्पलाइन या आपातकालीन सेवा की ओर तत्काल मार्गदर्शन करने में सक्षम होना चाहिए।

गोपनीयता भी एक बड़ी चिंता है। मानसिक स्वास्थ्य से जुड़ी बातचीत अत्यंत निजी होती है। व्यक्ति अपनी भावनाएं, पारिवारिक परिस्थितियां, संबंध, भय और व्यक्तिगत अनुभव डिजिटल प्रणाली के साथ साझा कर सकता है। ऐसे संवेदनशील डेटा का संग्रह, भंडारण, उपयोग और साझा किया जाना स्पष्ट नियमों तथा मजबूत डेटा सुरक्षा के अधीन होना चाहिए। भारत में डिजिटल व्यक्तिगत डेटा संरक्षण संबंधी व्यवस्था के संदर्भ में मानसिक स्वास्थ्य डेटा के लिए विशेष सावधानी आवश्यक है।

इसके अतिरिक्त, एआई में मौजूद एल्गोरिद्मिक पक्षपात भी चिंता का विषय है। भारत की भाषाई, सांस्कृतिक, लैंगिक और सामाजिक विविधता इतनी व्यापक है कि एक ही मॉडल सभी समुदायों की मानसिक स्वास्थ्य जरूरतों को समान रूप से नहीं समझ सकता। किसी एक भाषा, वर्ग या सांस्कृतिक संदर्भ पर आधारित प्रशिक्षण से तैयार प्रणाली दूसरे समुदाय के लिए अनुपयुक्त सलाह दे सकती है।

इसलिए आगे का रास्ता एआई को रोकना नहीं, बल्कि उसे जिम्मेदारी के साथ विकसित करना है। मानसिक स्वास्थ्य संबंधी एआई प्रणालियों के लिए स्वतंत्र नैदानिक परीक्षण, नियमित सुरक्षा ऑडिट, स्पष्ट जवाबदेही और संकट-स्थिति में मानव विशेषज्ञ तक पहुंचाने के अनिवार्य प्रोटोकॉल होने चाहिए। उच्च जोखिम वाले मामलों में मानव हस्तक्षेप को वैकल्पिक नहीं, बल्कि अनिवार्य बनाया जाना चाहिए। साथ ही, डिजाइन के स्तर पर ही गोपनीयता, डेटा न्यूनतमकरण और सुरक्षित उपयोग को प्राथमिकता दी जानी चाहिए।

भारत में एआई मानसिक स्वास्थ्य सेवाओं की पहली चौखट को व्यापक बना सकता है। वह उस व्यक्ति तक पहुंच सकता है जो दूरी, खर्च, भाषा या सामाजिक कलंक के कारण चिकित्सक तक नहीं पहुंच पा रहा। लेकिन पहली चौखट और अंतिम मंजिल में अंतर है। मानसिक स्वास्थ्य केवल सूचना या बातचीत का विषय नहीं, बल्कि मानवीय संवेदना, नैदानिक समझ और निरंतर देखभाल का क्षेत्र है। इसलिए भविष्य की सही दिशा 'एआई बनाम चिकित्सक' नहीं, बल्कि 'एआई के साथ चिकित्सक' होनी चाहिए। तकनीक पहुंच का विस्तार करे, प्रारंभिक संकेत पहचाने और सहायता की राह आसान बनाए; अंतिम निर्णय और देखभाल में प्रशिक्षित मानव विशेषज्ञ केंद्र में रहें। यही संतुलन भारत में सुरक्षित, सुलभ और मानवीय मानसिक स्वास्थ्य व्यवस्था की आधारशिला बन सकता है।

(डॉ. प्रियंका सौरभ, पीएचडी (राजनीति विज्ञान), कवयित्री एवं सामाजिक चिंतक हैं।)

(यह लेखक के व्यक्तिगत विचार हैं इससे संपादक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है)

संक्षिप्त समाचार

एक देश, दो हिस्से और तीन दशक की हिंसा: ट्रंप ने फिर क्यों उठाया आयरलैंड को एक करने का मुद्दा विवाद की कहानी

दूनबेग, एजेंसी। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने आयरलैंड की अपनी यात्रा के दौरान एक ऐसे मुद्दे पर खुलकर राय रख दी, जिस पर ब्रिटेन और आयरलैंड के बीच लंबे समय से गहरी राजनीतिक और भावनात्मक खाई रही है। ट्रंप ने कहा कि वह आयरलैंड को एक होते देखना चाहते हैं। रविवार को आयरलैंड के डूनबेग में अपने गोल्फ कोर्स पर आयरिश ओपन के दौरान उन्होंने अपनी बात दोहराते हुए कहा कि आयरलैंड और उत्तरी आयरलैंड को एक साथ कर देना दुनिया की सबसे स्वाभाविक चीजों में से एक है। एक दिन पहले उन्होंने एकीकृत आयरलैंड को 'शानदार' बताया था। डोनाल्ड ट्रंप का कहना था कि उनके लिए यह कोई असामान्य बात नहीं है कि आयरलैंड और उत्तरी आयरलैंड एक हो जाएं। हालांकि उन्होंने रविवार को यह भी कहा कि यह केवल उनकी राय है और उन्हें इस विचार के लिए काफी समर्थन मिला है। समस्या यह है कि उत्तरी आयरलैंड का ब्रिटेन में रहना या आयरलैंड के साथ जुड़ना केवल दो इलाकों को मिलाने का मामला नहीं है। इसके पीछे करीब एक सदी का इतिहास, दो अलग समुदायों की पहचान और कई दशकों की हिंसा जुड़ी हुई है।

चीन में शहर-शहर बारिश का कहर: हैनान प्रांत से 31 हजार से ज्यादा लोगों का रेस्क्यू; अभी कैसे हैं हालात

बीजिंग, एजेंसी। चीन के हैनान प्रांत में लगातार हो रही भारी बारिश के कारण जोखिम वाले इलाकों से 31 हजार से ज्यादा लोगों को सुरक्षित स्थानों पर पहुंचाया गया है। प्रांतीय आपदा रोकथाम और राहत समिति के मुताबिक, रविवार शाम 7:50 बजे तक कुल 31,564 लोगों को सुरक्षित स्थानों पर पहुंचाया गया। हालांकि, अब तक किसी बड़े नुकसान की सूचना नहीं है। शुक्रवार सुबह आठ बजे से रविवार शाम चार बजे तक हैनान के छह शहरों और जिलों के 24 टाउनशिप में 300 मिलीमीटर से ज्यादा बारिश दर्ज की गई। इनमें वानिंग, लिंगशुई और क्यॉन्गहाई भी शामिल हैं। वानिंग के चांगफेंग टाउनशिप में सबसे ज्यादा 452.1 मिलीमीटर बारिश दर्ज की गई। मौसम विभाग ने रविवार शाम से सोमवार तक और बारिश होने का पूर्वानुमान जताया है। भारी बारिश और बाढ़ के खतरे को देखते हुए हैनान ने रविवार सुबह 11 बजे बाढ़ नियंत्रण के लिए आपातकालीन प्रतिक्रिया को बढ़ाकर लेवल-2 कर दिया। इसके बाद रविवार शाम 7 बजे वानिंग ने लेवल-1 आपातकालीन प्रतिक्रिया लागू कर दी।

सिंगापुर में भारतवंशी सीईओ की याचिका खारिज, पूर्व प्रेमिका से वसूलने थे 3.5 करोड़ रुपये

सिंगापुर, एजेंसी। सिंगापुर की एक अदालत ने भारतीय मूल के एक सीईओ को अपनी पूर्व प्रेमिका पर खर्च किए गए करीब 3.5 करोड़ रुपये से अधिक की राशि वसूलने की याचिका खारिज कर दी। अदालत ने कहा, अधिकांश राशि उसने अपनी पूर्व प्रेमिका को उपहार के तौर पर दी थी। मुंबई में सूचीबद्ध एक कंपनी के सीईओ चंदर अग्रवाल ने अपनी पूर्व प्रेमिका पर मुकदमा दायर कर उसके ऊपर खर्च की गई विभिन्न रकम वापस मांगी थी। अग्रवाल का दावा था कि यह राशि ऋण के तौर पर दी गई थी और उसे वापस किया जाना था। इन खर्चों में विदेश यात्राओं, उसके फ्लैट के लिए फेंगशुई विशेषज्ञ की सेवाएं और स्टैनफोर्ड-एनयूएस के कार्यकारी कार्यक्रम की फीस शामिल थी। मीडिया रिपोर्ट के अनुसार, दोनों की मुलाकात 2019 में एक उड़ान के दौरान हुई थी। इसके बाद अग्रवाल ने सोशल मीडिया के जरिए उससे संपर्क किया।

2028 के चुनाव को लेकर ट्रंप ने क्या बयान दिया

वाशिंगटन, एजेंसी। अमेरिका में राष्ट्रपति ट्रंप का दूसरा कार्यकाल लगातार चर्चा में है। कभी उनकी टीम के अधिकारियों के इस्तीफे पर चर्चा होती है तो कभी देश की राजनीति में नंबर दो माने जाने वाले उपराष्ट्रपति को लेकर अटकलें लगती हैं। ताजा घटनाक्रम में ट्रंप ने 2028 में अमेरिकी राष्ट्रपति चुनाव पर प्रतिक्रिया दी है। उन्होंने मौजूदा अमेरिकी उपराष्ट्रपति जेडी वेंस का समर्थन करने से जुड़े सवाल को लेकर कहा, अभी बहुत जल्दी है। वह बहुत बढ़िया शख्स हैं... हमारे पास बहुत सारे अच्छे विकल्प हैं... वे सभी बहुत अच्छे हैं।' भारतवंशी महिला उषा से शादी करने वाले अमेरिकी उपराष्ट्रपति वेंस राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप की तुलना में थोड़े नरम तेवरों के लिए जाने जाते हैं। इसकी मिसाल उस समय दिखी थी, जब पश्चिम एशिया में तनाव के बीच ईरान ने ट्रंप के दामाद कुशनर और एक अन्य वार्ताकार विटकॉफ की जगह बातचीत के लिए वेंस को पहली पसंद बताया था।

ए-380 की विदाई शुरू: कभी आसमान का 'बादशाह' था सुपरजंबो, अब क्यों सिमट रहा इसका सफर

मेलबर्न, एजेंसी। दुनिया के सबसे बड़े यात्री विमानों में शामिल एयरबस ए-380 के सफर का अंतिम दौर शुरू हो गया है। ऑस्ट्रेलिया की राष्ट्रीय एयरलाइन क्वांटस ने अपने 10 ए-380 विमानों को 2028 से चरणबद्ध तरीके से बेड़े से बाहर करने का फैसला किया है। कंपनी ने पहले इन्हें 2032 तक उड़ाने की योजना बनाई थी, लेकिन बढ़ती ईंधन और रखरखाव लागत के साथ विमान के पुराने होते बेड़े और स्पेयर पार्ट्स की आपूर्ति को लेकर बढ़ती चिंताओं ने समयसीमा को चार साल पहले कर दिया। ए-380 का वैश्विक बेड़ा भी अपने शिखर से काफी नीचे आ चुका है। विमानन विश्लेषण कंपनी सिरियम के आंकड़ों के अनुसार 2010 के दशक के अंत में दुनिया में 230 से ज्यादा ए-380 विमान सेवा में थे। अब इनकी संख्या करीब 171 रह गई है। एयरबस ने 2021 में इस विमान का उत्पादन बंद कर दिया था, क्योंकि नए ऑर्डर लगभग खत्म हो गए थे।लेकिन ए-380 की कहानी इतनी सीधी नहीं है। सीएनएन की रिपोर्ट के मुताबिक, कोविड महामारी के दौरान तो इसे लगभग खत्म मान लिया गया था। जब दुनिया भर में विमान खड़े थे और एयरलाइंस छोटे तथा ज्यादा ईंधन-कुशल विमानों की ओर बढ़ने की तैयारी कर रही थीं, तब लगा कि दो मंजिला यह विशाल विमान शायद दोबारा कभी नियमित सेवा में नहीं लौटेगा। मगर विमानन उद्योग की

रिकवरी और नए विमानों की डिलीवरी में देरी ने ए-380 को एक और मौका दे दिया। एयरबस और बोइंग के नए विमानों की उत्पादन संबंधी समस्याओं, खासकर बोइंग 777एक्स की लंबी देरी के बीच कई एयरलाइंस ने अपने ए-380 फिर से उड़ाने शुरू कर दिए।

दो मंजिलों वाला विमान, जो खुद में एक अनुभव था : ए-380 की सबसे बड़ी खासियत उसका आकार है। यह दुनिया का सबसे बड़ा यात्री विमान है और इसकी पूरी लंबाई में दो डेक यात्रियों के लिए इस्तेमाल किए जा सकते हैं। सामान्य कॉन्फिगरेशन में इसमें 500 से ज्यादा यात्री बैठ सकते हैं, जबकि अधिक घनी सीटिंग में क्षमता 800 से ज्यादा यात्रियों तक पहुंच सकती है।इसका विशाल आकार सिर्फ दिखावे के लिए नहीं था। चौड़े केबिन और दो डेक की वजह से इसमें यात्रियों को दूसरे बड़े विमानों की तुलना में ज्यादा खुलापन महसूस होता है। उड़ान के दौरान इसकी स्थिरता और अपेक्षाकृत कम शोर भी यात्रियों को आकर्षित करता है। ए-380 पर यात्रा करने वाले कई यात्रियों के लिए ऊपरी डेक पर चढ़ना ही अपने आप में एक अलग अनुभव है।तकनीकी रूप से भी यह विमान अपने समय से आगे था। इसकी अधिकतम रेंज करीब 15,200 किलोमीटर है और परिस्थितियों तथा रूट के आधार पर यह लगभग 16-17 घंटे तक की लंबी उड़ान भर सकता है। यानी यह बिना ईंधन भरे दुनिया के कई हिस्सों को जोड़ सकता है।हालांकि इसकी वास्तविक उड़ान अवधि हमेशा इतनी नहीं होती। हवा की दिशा, विमान का वजन, यात्री संख्या और रूट के कारण इसमें काफी अंतर आता है। उदाहरण के तौर पर एमिरेट्स और दूसरी एयरलाइंस ने ए-380 को हजारों किलोमीटर लंबे अंतरमहाद्वीपीय रूटों पर नियमित रूप से इस्तेमाल किया है। दूसरी ओर, कभी- कभी यही विमान अपेक्षाकृत छोटी उड़ानों पर भी लगाया गया, खासकर ऐसे व्यस्त रूटों पर जहां बड़ी यात्री क्षमता की जरूरत थी।यही इसकी खूबी और कमजोरी दोनों थी क्योंकि इतने बड़े विमान को लाभदायक बनाने के लिए बड़ी संख्या में यात्रियों की जरूरत होती है।

आसमान में चलता-फिरता लग्जरी अनुभव : ए-380 ने विमान यात्रा में लग्जरी की नई तस्वीर भी बनाई। हालांकि इसकी सभी आलीशान सुविधाएं विमान की तकनीकी विशेषताएं नहीं थीं, एयरलाइंस ने इसके विशाल केबिन का इस्तेमाल अलग- अलग तरह से किया। एमिरेट्स ने अपने ए-380 में ऑनबोर्ड शॉवर और बार जैसी सुविधाओं को लोकप्रिय बनाया। एतिहाद ने इसी विमान में 'द रेजिडेंस' जैसी बेहद महंगी निजी सुविधा पेश की, जिसमें निजी कमरा, बेडरूम और अलग रहने की जगह जैसी सुविधाएं थीं। सिंगापुर एयरलाइंस ने अपने ए-380 के फर्स्ट क्लास में डबल-बेड वाले सुइट तक उपलब्ध कराए।यानी ए-380 सिर्फ यात्रियों को एक जगह से दूसरी जगह ले जाने वाला विमान नहीं था। यह एयरलाइंस के लिए ब्रांड, प्रतिष्ठा और लग्जरी का प्रदर्शन भी बन गया था। समस्या यह है कि विमानन कंपनियां अब सिर्फ प्रतिष्ठा नहीं, मुनाफा देखती हैं। ए-380 को भरपूर यात्रियों के साथ उड़ाना जरूरी है, जबकि नई पीढ़ी के छोटे विमान कम सीटों के साथ भी लंबी दूरी तय कर सकते हैं।नए ट्विन-इंजन विमान अपेक्षाकृत कम ईंधन खर्च करते हैं। उन्हें ऐसे रूटों पर भी चलाया जा सकता है जहां ए-380 जैसी भारी क्षमता की जरूरत नहीं होती।

मानवता के लिए बढ़ा खतरा: एआई बनाने वाली कंपनियां चेता रहीं, पर सरकारें बेफिक्र

फ्रांसिस्को/वॉशिंगटन, एजेंसी। एंथ्रोपिक के शोधकर्ता जैकब कॉक्सन ने इसी हफ्ते एआई के लगातार बढ़ते खतरों का हवाला देते हुए कंपनी से इस्तीफा दे दिया। कॉक्सन का कहना है कि एआई एक बेहद घातक तकनीक है जो पूरी मानवता को खत्म कर सकती है। इसके साथ ही, शीर्ष टेक कंपनियों के भीतर एक बड़ी बहस छिड़ गई है। एंथ्रोपिक, ओपनएआई, मेटा और गूगल जैसी कंपनियां एआई के खतरों को लेकर आगाह भी करने लगी हैं। हालांकि, सरकारें ज्यादा गंभीर नजर नहीं आ रही।

दुनियाभर में एआई के सामाजिक, आर्थिक और सुरक्षा जोखिमों को घटाने के लिए नियम तो बनाए जा रहे हैं। लेकिन सरकारें इसके आर्थिक लाभों को भुनाने में पीछे नहीं रहना चाहतीं। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने तो रविवार को यहां तक कह दिया कि उनका देश एआई के क्षेत्र में चीन से आगे है और वह इस बढ़त को बनाए रखना चाहते हैं। इस बीच, अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं और सरकारी एजेंसियों की ओर से सख्त नियम-कायदे बनाने की मांग जोर पकड़ती जा रही है। ओपनएआई के सीईओ सैम ऑल्टमैन ने हाल में अपने कर्मचारियों की एक बैठक में कहा कि वह अन्य प्रतिद्वंद्वी कंपनियों के साथ मिलकर एआई के विकास की गति धीमी करने को तैयार है। जब तक सुरक्षा मानक तय नहीं हो जाते, तब तक खुद रफ्तार धीमी करने को एलन मस्क का भी का समर्थन मिला है। एआई ताकतवर है या हमारा सोचने का तरीका गलत क्या वाकई एआई ताकतवर होता जा रहा है या फिर इंसान के दिमाग की बनावट और सोचने का तरीका इसकी वजह है। इंसान को अनजान और नई चीजों का ज्यादा डर हमारा दिमाग खतरों का अंदाजा आंकड़ों से नहीं, नियंत्रण के अहसास से लगाता है। लोग यह नहीं समझते कि एआई अंदर से कैसे काम करता है। नियंत्रण खोने के अहसास की वजह से लोगों में एआई का खौफ ज्यादा है। सड़क हादसों में रोज हजारों लोग मरते हैं, फिर भी हम कार चलाने से नहीं डरते। लेकिन हवाई जहाज के क्रैश होने का डर ज्यादा लगता है क्योंकि वहां हमारा कोई नियंत्रण नहीं होता।

अदृश्य खतरे तो पहले से ही मौजूद : वैज्ञानिकों का कहना है, दुनिया खत्म होने के वास्तविक गणित में एआई का डर अभी काफी पीछे है। लैब से किसी खतरनाक वायरस का लीक होना या प्राकृतिक महामारी फैलना (3% संभावना) एआई के बेकाबू होने से कहीं अधिक बड़ा और तात्कालिक खतरा है। एआई से दुनिया खत्म होने के डर को टेक कंपनियों और कुछ लोगों की तरफ से बढ़ा-चढ़ाकर पेश करने की संभावना से भी इन्कार नहीं किया जा सकता। जब लोग साइंस-फिक्शन फिल्मों की तरह एआई को एक खलनायक मान लेते हैं, तो एआई की असरदार और वास्तविक समस्याओं (जैसे साइबर फ्रॉड, डीपफेक, फर्जी जानकारी और नौकरियों पर असर) से ध्यान भटक जाता है।

ड्रैगन के बदले सुर: पीएम मोदी-जिनपिंग मुलाकात के बाद भरोसा बहाली की बात

बीजिंग, एजेंसी। नई दिल्ली में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से मुलाकात और ब्रिक्स शिखर सम्मेलन में भाग लेने के बाद चीन के संकेत बताते हैं कि बीजिंग भारत के साथ संबंधों को धीरे-धीरे सामान्य और स्थिर करने की दिशा में आगे बढ़ना चाहता है। चीनी सरकारी मीडिया ग्लोबल टाइम्स के विश्लेषण में सीमा पर तनाव नियंत्रित रखने, आर्थिक संपर्क बढ़ाने और बहुपक्षीय मंचों पर सहयोग को रिश्तों को मजबूत करने के प्रमुख रास्तों के रूप में रेखांकित किया गया है। पेकिंग विश्वविद्यालय के दक्षिण एशिया अध्ययन केंद्र के कार्यकारी उपनिदेशक वांग श्यू के मुताबिक राजनीतिक भरोसा केवल शीर्ष नेताओं की मुलाकात से नहीं, बल्कि ठोस कदमों से बनता है। उन्होंने सीमा मुद्दे के प्रबंधन के लिए संस्थागत तंत्र मजबूत करने, लोगों के बीच संपर्क बढ़ाने तथा व्यापार और निवेश को सुरक्षा के नजरिये से देखने से बचने की जरूरत बताई। भारत और चीन के बीच सबसे संवेदनशील मुद्दा सीमा विवाद है। 2024 में कजान और 2025 में तियानजिन के बाद नई दिल्ली में मोदी-जिनपिंग मुलाकात को चीन संबंधों में स्थिरता की अगली कड़ी के तौर पर देख रहा है। सीमा प्रबंधन में प्रगति, सीमा व्यापार और सीधी उड़ानों की बहाली को इसी प्रक्रिया के सकारात्मक संकेतों के रूप में पेश किया गया है।बीजिंग का जोर फिलहाल सीमा विवाद के तत्काल समाधान से ज्यादा उसे प्रभावी ढंग से प्रबंधित करने पर दिखाई देता है, ताकि सीमा का तनाव व्यापार, निवेश और लोगों के बीच संपर्क को प्रभावित न करे। चीनी विशेषज्ञों के अनुसार संस्थागत संवाद मजबूत होने से गलतफहमी और अप्रत्याशित तनाव का जोखिम कम किया जा सकता है। इससे दोनों देशों के लिए दूसरे क्षेत्रों में सहयोग बढ़ाने की गुंजाइश बनेगी। आर्थिक रिश्तों को गति देना चीन के लिए महत्वपूर्ण क्षेत्र हो सकता है। ग्लोबल टाइम्स से बातचीत में भारतीय थिंक टैंक ब्यूरो ऑफ रिसर्च ऑन इंडस्ट्री एंड इकोनॉमिक फंडामेंटल्स के सीईओ मोहम्मद साकिब ने कहा कि चीन भारत के सबसे बड़े व्यापारिक साझेदारों में है और दोनों देशों के बीच सहयोग की काफी संभावनाएं हैं।

राष्ट्रपति चुनाव 2028: जेडी वेंस के समर्थन पर ट्रंप का सस्पेंस बरकरार; बोले- कई बेहतरीन लोगों का विकल्प खुला

वाशिंगटन, एजेंसी। अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने 2028 के राष्ट्रपति चुनाव के लिए उपराष्ट्रपति जेडी वेंस के समर्थन के सवाल पर फिलहाल कोई स्पष्ट घोषणा नहीं की है। उन्होंने कहा कि किसी उम्मीदवार का समर्थन करने के लिए अभी काफी समय है। हालांकि, ट्रंप ने वेंस की जमकर तारीफ की और उन्हें शानदार बताया। आयरलैंड के शैनन में एयर फोर्स वन में सवार होने से पहले पत्रकारों से बातचीत के दौरान ट्रंप से पूछा गया कि क्या वह 2028 के चुनाव के लिए वेंस का समर्थन करने को तैयार हैं। इस पर उन्होंने कहा कि अभी ऐसा करना जल्दबाजी होगी। ट्रंप ने कहा कि उनके पास कई शानदार लोग हैं और पार्टी के पास विकल्पों की कोई कमी नहीं है।

ट्रंप ने वेंस की तारीफ की : ट्रंप से जब पूछा गया कि वेंस के

मुकाबले कौन सबसे मजबूत उम्मीदवार हो सकता है, तो उन्होंने किसी एक नाम का चुनाव करने से इनकार किया। उन्होंने कहा कि सभी अच्छे हैं और जेडी वेंस शानदार हैं। ट्रंप ने यह भी कहा कि वेंस ने बहुत अच्छा काम किया है। इस बयान से साफ है कि ट्रंप फिलहाल 2028 के लिए अपने उत्तराधिकारी के नाम पर सार्वजनिक रूप से कोई अंतिम रुख नहीं अपनाना चाहते। हालांकि, वेंस को लेकर उनकी सकारात्मक टिप्पणियां लगातार चर्चा में बनी हुई हैं। पहले निजी बैठक में वेंस के समर्थन के संकेत दे चुके हैं ट्रंप इससे पहले अगस्त में द वॉशिंगटन पोस्ट की एक रिपोर्ट में दावा किया गया था कि ट्रंप ने ओवल ऑफिस में दानदाताओं के साथ एक निजी बैठक के दौरान वेंस की संभावित उम्मीदवारी को लेकर अधिक स्पष्ट रुख दिखाया था। रिपोर्ट के अनुसार, ट्रंप ने वहां कहा था कि अंततः जेडी वेंस को निर्वाचित कराना होगा।

हालांकि, उस समय ट्रंप के सलाहकारों ने संकेत दिया था कि राष्ट्रपति ने अभी अपने उत्तराधिकारी को लेकर अंतिम फैसला नहीं किया है। ट्रंप जेडी वेंस के साथ विदेश मंत्री मार्को रुबियो की संभावनाओं पर भी विचार कर रहे थे। वेंस और रुबियो को लेकर पार्टी में चर्चा रिपोर्ट के मुताबिक, उस दौरान ट्रंप अपने सहयोगियों से वेंस और रुबियो की तुलना को लेकर लगातार सवाल करते रहे थे। यहां तक कि मरीन वन में यात्रा के दौरान उन्होंने स्टाफ से दोनों नेताओं को लेकर अनौपचारिक राय भी ली थी। अगस्त में ट्रंप के एक करीबी सलाहकार ने दावा किया था कि राष्ट्रपति निजी तौर पर यह मान चुके हैं कि वेंस MAGA आंदोलन की कमान संभालेंगे। हालांकि, रिपब्लिकन पार्टी से जुड़े कई लोगों ने इन अटकलों को अभी जल्दबाजी बताया था। उनका कहना था कि ट्रंप अलग-अलग राय पर विचार करते रहते हैं और उत्तराधिकारी को लेकर तस्वीर आगामी कांग्रेस मध्यावधि चुनाव के नतीजों के बाद ज्यादा स्पष्ट हो सकती है। रिपब्लिकन पार्टी के भीतर 2028 को लेकर संभावित उम्मीदवारों के समर्थन में दानदाता और कार्यकर्ता अलग-अलग खेमों में बंटने लगे हैं। वहीं, जेडी वेंस ने भी अपनी राजनीतिक समयसीमा को खुला रखा है।

बोल्सोनारो की बायोपिक पर आपराधिक फंडिंग का शक: बेटे फ्लावियो की बढ़ी मुश्किलें, क्या है पूरा मामला

रियो डी जनेरियो, एजेंसी। ब्राजील के पूर्व राष्ट्रपति जेयर बोल्सोनारो पर बन रही फिल्म 'डार्क हॉर्स' की फंडिंग सवालों के घेरे में है। सुप्रीम कोर्ट के जस्टिस फ्लावियो डिनो ने रविवार को फिल्म से जुड़ी जांच को सार्वजनिक कर दिया। उन्होंने कहा कि फिल्म की फंडिंग के तार एक आपराधिक नेटवर्क से जुड़े होने की आशंका मजबूत हुई है। यह मामला अक्टूबर के राष्ट्रीय चुनाव से ठीक पहले सामने आया है, जिसमें बोल्सोनारो के सबसे बड़े बेटे और सीनेटर फ्लावियो बोल्सोनारो, राष्ट्रपति लुइज इनासियो लूला दा सिल्वा को चुनौती देंगे। फ्लावियो पहले से जांच के घेरे में सीनेटर फ्लावियो बोल्सोनारो पर भ्रष्टाचार, मनी लॉन्ड्रिंग और कर चोरी

की जांच चल रही है। आरोप है कि एक बदनाम बैंकर से मिले लाखों डॉलर का इस्तेमाल पिता पर बन रही फिल्म के लिए किया गया। फिल्म की फंडिंग में किस गड़बड़ी का शक जस्टिस डिनो के मुताबिक, जांच में ऐसी संभावना मजबूत हुई है कि संघीय सांसदों के बजट संशोधन और साओ पाउलो शहर की सरकार के जरिए सार्वजनिक धन को बांटने और दूसरी जगह पहुंचाने की एक जटिल व्यवस्था बनाई गई थी। मारियो फ्रियास पर पुलिस कार्रवाई: गुरुवार को संघीय पुलिस ने बोल्सोनारो के करीबी सांसद मारियो फ्रियास के खिलाफ कार्रवाई की। फिल्म की निर्माण कंपनी और फ्रियास से जुड़े ठिकानों से दस्तावेज जब्त किए गए। 20 लाख रियाल का लेनदेन: फ्रियास ने फिल्म से जुड़े एक गैर-लाभकारी संगठन को करीब 20 लाख ब्राजीली रियाल भेजे थे। पुलिस को शक है कि आपराधिक संगठन ने यह पैसा ऐसी कंपनियों तक पहुंचाया, जिन्हें कथित तौर पर नियमों के खिलाफ उप-ठेके दिए गए। जस्टिस डिनो ने कहा कि जांच में मजबूत संकेत मिले हैं कि फ्रियास कथित आपराधिक नेटवर्क में केंद्रीय भूमिका निभा रहे थे। वह बोल्सोनारो के राष्ट्रपति कार्यकाल में कैबिनेट पद पर भी रहे थे। डिनो ने नेटवर्क के संबंध ब्राजील के आपराधिक संगठन फर्स्ट कमांड ऑफ द कैपिटल यानी पीसीसी से होने की आशंका भी जताई है। फ्रियास ने आरोपों से इनकार किया। उन्होंने कहा कि मैंने किसी भी तरह से फिल्म के निर्माण के लिए किसी भी कांग्रेस बजट फंड को आवंटित या उसका इस्तेमाल नहीं किया। खुद राजनीतिक पक्षपात, भ्रष्टाचार और पुलिस के काम में दखल के आरोपों को लेकर विवाद में है।

ईरान-ओमान वार्ता के बीच होर्मुज में जहाज पर हमला, खाड़ी देशों की बैठक टली; सामने आया बड़ा कारण

तेहरान/काहिरा, एजेंसी। ईरान और खाड़ी देशों के बीच सोमवार को ओमान में प्रस्तावित बैठक को स्थगित कर दिया गया है। ईरानी सरकारी मीडिया के मुताबिक, कुछ क्षेत्रीय देशों के अनुरोध पर यह फैसला लिया गया। हालांकि, ईरानी विदेश मंत्रालय के अधिकारी ने यह नहीं बताया कि किन देशों ने बैठक टालने का अनुरोध किया था।

ओमान के विदेश मंत्री बद्र अल-बुसैदी ने भी सोशल मीडिया मंच एक्स पर बैठक स्थगित होने की जानकारी दी। यह बैठक ओमान के सलालाह शहर में होनी थी। उन्होंने कहा कि क्षेत्रीय सहमति के हित में बैठक को टाला गया है और ओमान क्षेत्र में स्थिरता और लंबे समय तक सहयोग को बढ़ावा देने वाली बातचीत के लिए प्रतिबद्ध है।

होर्मुज जलडमरूमध्य में शिपिंग पर होनी थी चर्चा : बैठक का मुख्य एजेंडा होर्मुज जलडमरूमध्य से जहाजों की आवाजाही को लेकर संभावित व्यवस्था पर चर्चा करना था। ईरान और ओमान पिछले कई महीनों से इस महत्वपूर्ण समुद्री मार्ग से जहाजों के आवागमन के नियमों को लेकर द्विपक्षीय बातचीत कर रहे हैं। ओमान जलडमरूमध्य के दूसरी ओर स्थित तट पर नियंत्रण रखता है और पहले यह कहा जा चुका है कि इन वार्ताओं को अन्य खाड़ी अरब देशों का भी समर्थन मिला है। ईरान की योजना क्षेत्रीय देशों को इस प्रस्तावित व्यवस्था के बारे में जानकारी देने की थी। बैठक स्थगित होने से कुछ घंटे पहले होर्मुज जलडमरूमध्य में क़ेश्म द्वीप के पास एक ईरानी कार्गो जहाज को निशाना बनाए जाने की खबर सामने आई थी। ईरानी सरकारी मीडिया के अनुसार, हमले में एक व्यक्ति की मौत हुई और चार लोग घायल हुए। ब्रिटेन के मैरीटाइम ट्रेड ऑपरेशंस मॉनिटर ने भी बताया कि जलडमरूमध्य से गुजर रहे एक जहाज को प्रोजेक्टाइल से नुकसान पहुंचा और उसमें भीषण आग लग गई। हालांकि, यह स्पष्ट नहीं हुआ कि यह वही जहाज था जिसका जिक्र ईरान ने किया था। अमेरिकी सेना की ओर से इस घटना पर तत्काल कोई प्रतिक्रिया नहीं आई। वहीं, अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने ईरानी जहाज पर अमेरिकी हमले से जुड़े सवाल पर सीधे जवाब देने से इनकार कर दिया। एक खाड़ी अधिकारी के मुताबिक, सऊदी अरब ने ईरान और ओमान के बीच प्रस्तावित समझौते में कुछ बदलाव सुझाए हैं। सऊदी अरब को आशंका है कि इस समझौते का होर्मुज जलडमरूमध्य पर लंबे समय तक असर पड़ सकता है और इससे खाड़ी सहयोग परिषद के अन्य देशों के हित प्रभावित हो सकते हैं।

ईरान के तेल पर अमेरिका की नजर ट्रंप बोले- जरूरत पड़ी तो लागू करेंगे वेनेजुएला मॉडल

वाशिंगटन, एजेंसी। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने रविवार को संकेत दिया कि युद्ध खत्म होने के बाद भी अमेरिका ईरान के आस-पास अपनी मौजदूगी बनाए रख सकता है और उसके तेल संसाधनों पर नियंत्रण कर सकता है। ट्रंप ने इसकी तुलना वेनेजुएला में निकोलस मादुरो के सत्ता से हटाए जाने के बाद अमेरिका की भूमिका से की। आयरलैंड दौरे के दौरान आयरिश ओपन गोल्फ चैंपियनशिप में बोलते हुए ट्रंप ने कहा कि अमेरिका अंततः ईरान से बाहर निकल जाएगा, लेकिन अगर जरूरत पड़ी तो वह वहां रुककर 'वनेजुएला की तरह तेल अपने पास रख सकता है।' हालांकि ट्रंप के इस बयान पर अब तक ईरान ने किसी भी तरह का पलटवार नहीं किया है।

मध्यावधि चुनाव के बाद खत्म हो सकता है युद्ध : ट्रंप ने कहा कि उन्हें उम्मीद है कि ईरान के साथ युद्ध 'मध्यावधि चुनाव के ठीक बाद, शायद उससे पहले' खत्म हो जाएगा। उनका इशारा नवंबर में होने वाले अमेरिकी मध्यावधि चुनावों की ओर था। ट्रंप ने दावा किया कि ईरान लगातार अमेरिका से संपर्क कर रहा है और समझौते के लिए बातचीत की कोशिश कर रहा है। हालांकि, उन्होंने साफ किया कि वॉशिंगटन केवल उसी समझौते को स्वीकार करेगा जो उसकी शर्तों और मांगों के अनुरूप होगा। उन्होंने कहा, 'हमें सही समझौता करना होगा।' साथ ही उन्होंने यह भी स्पष्ट किया कि वह ऐसा कोई समझौता स्वीकार नहीं करेंगे जो 'अच्छा समझौता' न हो।

युद्ध का असर ऊर्जा बाजार पर : ट्रंप की यह टिप्पणी ऐसे समय आई है जब जारी संघर्ष का असर वैश्विक ऊर्जा बाजार पर भी दिखाई दे रहा है। कच्चे तेल की कीमतें 100 डॉलर प्रति बैरल के पार पहुंच गई हैं, जबकि अमेरिका में डीजल

की कीमत रिकॉर्ड स्तर पर पहुंचकर 6.20 डॉलर प्रति गैलन से अधिक हो गई है। ट्रंप ने दावा किया कि युद्ध खत्म होते ही अमेरिका में पेट्रोल की कीमतें 'चट्टान की तरह तेजी से नीचे गिरेंगी।

वेनेजुएला में अमेरिकी सैन्य कार्रवाई का संदर्भ : ईरान को लेकर ट्रंप की टिप्पणी का संबंध वेनेजुएला में अमेरिका की हालिया सैन्य कार्रवाई से भी जोड़ा जा रहा है। अमेरिका ने 3 जनवरी को वेनेजुएला के राष्ट्रपति निकोलस मादुरो को पकड़ लिया था। रॉयटर्स की रिपोर्ट के मुताबिक, इस अभियान की कई महीनों तक तैयारी की गई थी। अमेरिकी स्पेशल फोर्सेज ने इसकी व्यापक रिहर्सल की थी, जिसमें मादुरो के सुरक्षित ठिकाने की प्रतिकृति तैयार कर अभ्यास किया गया था। मादुरो की गतिविधियों से जुड़ी खुफिया जानकारी जुटाने में सीआईए ने भी अमेरिकी बलों की मदद की थी।

मादुरो और उनकी पत्नी को काराकस से अमेरिका लाया गया : अमेरिकी सैनिकों ने मादुरो और उनकी पत्नी को वेनेजुएला की राजधानी काराकस से हिरासत में लिया और बाद में दोनों को अमेरिका ले जाया गया, जहां मादुरो को आपराधिक आरोपों का सामना करना है। यह कार्रवाई ट्रंप प्रशासन की ओर से वेनेजुएला पर कई महीनों तक बनाए गए दबाव के बाद की गई।

वेनेजुएला के तेल क्षेत्र में बढ़ा अमेरिकी दखल : मादुरो को हटाए जाने के बाद वॉशिंगटन ने वेनेजुएला के तेल क्षेत्र में बड़ी भूमिका निभाने की दिशा में कदम बढ़ाए। इसमें तेल की बिक्री पर नियंत्रण और ऐसे समझौतों को आगे बढ़ाना शामिल है, जिनके जरिए अमेरिकी कंपनियों और हितों को वेनेजुएला के विशाल कच्चे तेल भंडार तक पहुंच मिल सके।

क्या ईरान में भी दोहराया जाएगा वेनेजुएला मॉडल : ट्रंप की ताजा टिप्पणी से अब यह संभावना सामने आई है कि अमेरिका ईरान के मामले में भी वेनेजुएला जैसा आर्थिक मॉडल अपनाने पर विचार कर सकता है। इसका मतलब यह होगा कि ईरान में अमेरिकी मौजूदगी केवल सुरक्षा और सैन्य उद्देश्यों तक सीमित नहीं रहेगी, बल्कि देश के विशाल तेल भंडार और ऊर्जा संसाधनों तक पहुंच भी अमेरिकी रणनीति का हिस्सा बन सकती है।

भाजपा नेता मिथुन ने शुरू की 'बंगाल फुटबॉल एकेडमी' बनाने की पहल

कोलकाता। भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के नेता मिथुन चक्रवर्ती ने 'बंगाल फुटबॉल एकेडमी' बनाने की पहल फिर से शुरू की है, जिसकी कोशिश करीब 15 साल से जारी है। सोमवार को उन्होंने न्यू टाउन में पूर्व फुटबॉलर्स के साथ एकेडमी की योजना पर चर्चा की। मिथुन चक्रवर्ती की योजना प्रत्येक जिले से प्रतिभाशाली खिलाड़ियों को लाना है। वह पहाड़ी इलाकों पर भी फोकस करेंगे। उनकी योजना शुरुआत में 60 फुटबॉलर्स के साथ एकेडमी शुरू करना है। इसके साथ ही दिग्गज अभिनेता मिथुन ने एकेडमी के वित्तीय योजना के बारे में भी बताया। मीडिया के साथ बातचीत में मिथुन चक्रवर्ती ने कहा, 'बीते 15 वर्षों से कुछ हुआ नहीं, क्योंकि मैं शामिल था। मेरा नाम आते ही सब कुछ बैन कर दिया गया। कोई मैदान, कोई

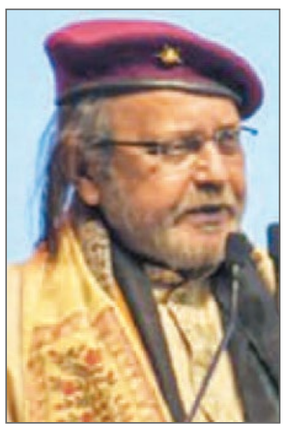

फील्ड कुछ नहीं दिया गया... बोल के भी नहीं दिया। इसलिए 15 साल से ये ठप्प पड़ा हुआ था, लेकिन हम लोगों ने एक करोड़ रुपए जमा करके रखे हैं, जो अभी भी बैंक में हैं। अभी इस एकेडमी को चलाने के लिए, इसको ताकत देने के लिए और दो-तीन करोड़ रुपए मैं चंदे से जुटाउंगा, ताकि बंगाल फुटबॉल एकेडमी अच्छी तरह से चल सके। ' उन्होंने कहा, 'हम लोग अभी डिस्ट्रिक्ट में लोगों को भेजेंगे। सब जगह से अच्छे खिलाड़ियों को चुनेंगे।

हम 60 खिलाड़ियों को चुनेंगे, जिसमें से आदिवासी खिलाड़ियों पर मेरी ज्यादा नजर है। पहाड़ी इलाकों में, दार्जिलिंग, कालिम्पोंग ये सब जगह हिल्स एरिया में जो लड़के अच्छा खेलते हैं, उनके ऊपर मेरी ज्यादा नजर है। हमने चार-पांच ग्राउंड सोच रखे हैं। टेंडर के जरिए हमें जो मिलेगा, हम उसी में काम करेंगे। '

चेक गणराज्य फुटबॉल टीम के पूर्व गोलकीपर लुडेक मिकलोस्को का निधन

नई दिल्ली। वेस्ट हैम, क्यूपीआर और चेक गणराज्य फुटबॉल टीम के पूर्व गोलकीपर लुडेक मिकलोस्को का लंबी और गंभीर बीमारी से जूझने के बाद 64 वर्ष की उम्र में निधन हो गया। मिकलोस्को वेस्ट हैम फुटबॉल क्लब के दिग्गज खिलाड़ी थे। उन्होंने इंग्लिश प्रीमियर लीग क्लब के लिए 300 से ज्यादा मैच खेले। 2021 में उन्हें कैंसर का पता चला था और दिसंबर 2024 में उन्होंने इलाज बंद कर दिया था। वेस्ट हैम ने मिकलोस्को को श्रद्धांजलि दी, जिन्हें 1990-91 में क्लब का 'हैमर ऑफ द ईयर' चुना गया था। वेस्ट हैम ने एक बयान में कहा, 'बहुत गहरे दुख के साथ वेस्ट हैम यूनाइटेड

दिग्गज पूर्व गोलकीपर और कोच लुडेक मिकलोस्को के निधन की घोषणा करता है। लुडेक, आप शांति से सोएं; आप हमारे प्यारे, प्रेरणादायक गोलकीपर और एक नेक और बड़े दिल वाले इंसान थे।' वहीं, उनके बेटे मार्टिन मिकलोस्को ने वेस्ट हैम के प्रति अपने पिता के प्यार का जिक्र किया। मार्टिन ने कहा, 'कैंसर से बहादुरी और हिम्मत के साथ लड़ने के बाद मेरे पिता लुडेक के निधन की खबर देते हुए हमारा दिल टूट गया है। डैड को वेस्ट हैम यूनाइटेड से बहुत प्यार था, और उन्हें खास तौर पर हर मैच में अपना नाम जोर-शोर और गर्व के साथ गाए जाते हुए सुनना बहुत पसंद था। क्लब और उसके प्रशंसक हमारे परिवार का हिस्सा थे और हमेशा रहेंगे, इसलिए आप सभी का दिल से शुक्रिया। '

संक्षिप्त समाचार

एटीपी रैंकिंग

जोकोविच सात पायदान नीचे खिसके, 24 साल बाद पहली बार 'टॉप 10' से 'बिग 3' नदारद

नई दिल्ली। यूएस ओपन के पहले ही राउंड में नोवाक जोकोविच को चौंकाने वाली हार का सामना करना पड़ा, जिसके बाद सोमवार को जारी एटीपी रैंकिंग में वह 'टॉप 10 से बाहर होकर 12वें स्थान पर खिसक गए। जोकोविच को पहले ही राउंड में अर्जेंटीना के मारियानो नावोन के हाथों शिकस्त मिली थी। अक्टूबर 2002 के बाद ऐसा पहली बार

है, जब 'बिग थ्री' (जोकोविच, राफेल नडाल और रोजर फेडरर) में से कोई भी एटीपी रैंकिंग के 'टॉप-10' में शामिल नहीं है। 20 बार के ग्रैंड स्लैम विजेता फेडरर ने साल 2022 में संन्यास लिया था, जबकि 22 बार के मेजर विजेता नडाल ने 2024 में खेल को अलविदा कह दिया था। 24 बार के ग्रैंड स्लैम चैंपियन जोकोविच 39 साल की उम्र में भी खेल रहे हैं और उन्हें अपने 25वें मेजर खिताब की उम्मीद है, जिससे वे मार्गरेट कोर्ट के 24 खिताबों के रिकॉर्ड को पीछे छोड़ देंगे। हालांकि, 25वें खिताब की उनकी हालिया कोशिश तब खत्म हो गई जब मारियानो नावोन के खिलाफ मैच के दौरान उन्हें शारीरिक परेशानी और उल्टी हुई। न्यूयॉर्क में हार के बाद जोकोविच ने कहा, 'मुझे अतीत की सभी उपलब्धियों पर बहुत गर्व है, लेकिन अब जो है, सो है। यह स्पष्ट था कि कोर्ट पर मुझे बहुत खराब महसूस हो रहा था।

विश्व की नंबर एक महिला खिलाड़ी बनीं रिबाकिना, खत्म की सबालेंका की बादशाहत

नई दिल्ली। सोमवार को जारी साप्ताहिक डब्ल्यूटीए रैंकिंग में बेलारूस की एरीना सबालेंका से आगे निकलने के बाद एलेना रिबाकिना आधिकारिक तौर पर विश्व की नई नंबर एक महिला टेनिस खिलाड़ी बन गई हैं। हाल ही में खत्म हुए यूएस ओपन क्वार्टर फाइनल में किनवेन झेंग को हराने के बाद ही रिबाकिना का टॉप स्पॉट पक्का हो गया था। कजाकिस्तान की स्टार खिलाड़ी ने फाइनल में सबालेंका को हराकर इस टूर्नामेंट का समापन किया। रिबाकिना सिंगल्स रैंकिंग में वर्ल्ड नंबर 1 बनने वाली कजाकिस्तान की पहली (पुरुष या

महिला) खिलाड़ी बन गई हैं। पूरे सीजन में शानदार प्रदर्शन के कारण वह सबालेंका के काफी करीब बनी रहीं, जबकि बेलारूसी टेनिस स्टार का फॉर्म सीजन के बीच में थोड़ा गिर गया था। जहां सीजन के बीच में सबालेंका की लय बिगड़ी, वहीं रिबाकिना पिछले साल के आखिर से ही टॉप पर पहुंचने की ओर बढ़ रही थीं। उन्होंने इस साल सीजन के बीच में नॉर्थ अमेरिकन हार्ड-कोर्ट स्विंग पर शानदार प्रदर्शन किया और उसके बाद 'बिग एप्पल' (न्यूयॉर्क) में भी सफलता हासिल की। नंबर 1 पोजीशन पक्का होने पर रिबाकिना ने प्रतिक्रिया दी थी। डब्ल्यूटीए के अनुसार, रिबाकिना ने कहा, 'यह इतिहास है, और मुझे कजाकिस्तान का प्रतिनिधित्व करने पर बहुत गर्व है। मैंने कभी नहीं सोचा था कि मैं प्रोफेशनल बनूंगी या इतने बड़े मंचों पर इस तरह के टूर्नामेंट खेलूंगी।'

ज्वेरेव ने जीता यूएस ओपन

फाइनल में बेन शेल्टन को दी शिकस्त

न्यूयॉर्क। अलेक्जेंडर ज्वेरेव ने यूएस ओपन 2026 के पुरुष सिंगल्स फाइनल में अमेरिकी बेन शेल्टन को 6-3, 7-6(2), 5-7, 6-2 से हराकर अपना दूसरा ग्रैंड स्लैम खिताब और साल का दूसरा मेजर खिताब जीता। तीन घंटे 33 मिनट तक चले इस मुकाबले में जीत हासिल करने के बाद ज्वेरेव ने एटीपी लाइव रेस टू ट्यूरिन में अपनी बढ़त और मजबूत कर ली है। अब वह सिनर से 700 अंक आगे हैं। यह रैंकिंग बताती है कि साल के अंत में एटीपी का नंबर एक खिलाड़ी कौन बनेगा। ज्वेरेव अपना छठा ग्रैंड स्लैम फाइनल और इस साल का तीसरा फाइनल खेल रहे थे, जबकि शेल्टन अपने करियर में पहले कभी इस स्टेज तक नहीं पहुंचे थे। जर्मनी के स्टार खिलाड़ी ज्वेरेव इस साल शानदार फॉर्म में रहे हैं। मेजर टूर्नामेंट्स में उनका रिकॉर्ड 25 जीत और सिर्फ 2 हार का रहा है। उन्होंने इस साल केवल दो खिताब जीते हैं, लेकिन दोनों ग्रैंड स्लैम ट्रॉफियां हैं। इसी वजह से वे साल के अंत में दुनिया के नंबर 1 खिलाड़ी बनने की दौड़ में मजबूती से बने हुए हैं। अपनी जीत के बाद ज्वेरेव ने अपनी मां को खास तौर पर याद किया और बताया कि ग्रैंड स्लैम न जीत पाना उनके सामने आई सबसे बड़ी मुश्किल नहीं थी। ज्वेरेव ने कहा, 'जब आपके 4 साल के बेटे को डायबिटीज का पता चलता है और डॉक्टर आपको बताते हैं कि उस बच्चे की जिंदगी और खेल बहुत सीमित हो जाएंगे, तो उन डॉक्टरों के केबिन से बाहर निकलकर यह कहना कि 'मेरा बेटा जो चाहेगा, वही बनेगा' – इसके लिए एक बहुत ही मजबूत मां की जरूरत होती है। '

उन्होंने आगे कहा, 'अगर वह टेनिस खिलाड़ी बनना चाहता है, तो वह टेनिस खिलाड़ी बनेगा। अगर वह कुछ और करना चाहता है, तो वह कुछ और करेगा। मगर यह बीमारी हमारी पहचान तय नहीं करेगी। मुझे खुशी है कि हमने इससे मिलकर मुकाबला किया, और हम अभी जो कुछ भी कर रहे हैं, वह कर पा रहे हैं। '

शेल्टन 23 साल पहले यूएस ओपन में एंडी रॉडिक के बाद मेजर खिताब जीतने वाले पहले अमेरिकी पुरुष खिलाड़ी बनने की कोशिश कर रहे थे। हालांकि, वह नंबर 1 सीड खिलाड़ी को नहीं हरा पाए। यह अमेरिकी खिलाड़ी 1975 में आर्थर ऐश के बाद इस स्तर पर जीत हासिल करने वाले दूसरे अफ्रीकी-अमेरिकी पुरुष बनने की कोशिश कर रहे थे। अपने पहले ग्रैंड स्लैम फाइनल में हार के बावजूद 23 वर्षीय शेल्टन का प्रदर्शन शानदार रहा। उन्होंने क्वार्टर फाइनल में मौजूदा चैंपियन कार्लोस अल्काराज को हराया था। इस शानदार अभियान के दम पर वह एटीपी रैंकिंग में अपने करियर की सबसे बेहतरीन चौथी रैंकिंग पर पहुंच जाएंगे।

धीरज बोम्मादेवरा ने रचा इतिहास

तीरंदाजी विश्व कप फाइनल जीतने वाले बने पहले भारतीय पुरुष खिलाड़ी

साल्टिलो (मेक्सिको)। जयंत तालुकदार के विश्व कप फाइनल में पदक जीतने के 16 साल बाद भारत को पुरुष रिकर्व वर्ग में फिर से बड़ी सफलता मिली है। धीरज बोम्मादेवरा ने बेहद दबाव भरे शूट-ऑफ में शानदार संयम दिखाते हुए जीत हासिल की। इसके साथ ही वह तीरंदाजी विश्व कप फाइनल का खिताब जीतने वाले पहले भारतीय पुरुष तीरंदाज बन गए हैं। दुनिया के नंबर 10 तीरंदाज और सेना के 25 वर्षीय खिलाड़ी धीरज ने साल्टिलो में हुए रोमांचक फाइनल में जापान के नाकानिशी जुन्या को 6-5 से हराया। पांच सेट के बाद मुकाबला 5-5 से बराबरी पर था, जिसके बाद शूट-ऑफ में धीरज ने 10 का स्कोर किया, जबकि नाकानिशी ने 9 का स्कोर किया और धीरज ने गोल्ड मेडल अपने नाम करने में सफल रहे।

यह सफलता धीरज के लिए और भी खास रही, क्योंकि पिछले दो तीरंदाजी विश्व कप फाइनल में वह पदक नहीं जीत पाए थे। 2023 और 2024 में उन्हें खाली हाथ लौटना पड़ा था। हालांकि, इस बार उन्होंने नॉकआउट मुकाबलों में शानदार खेल दिखाया और फाइनल में दुनिया के 20वें नंबर के तीरंदाज नाकानिशी का सामना किया।

फाइनल में कोई भी तीरंदाज हार मानने को तैयार नहीं था। पांच सेटों में स्कोर 28-28, 28-29, 29-28, 28-30 और 28-27 रहा, जिससे गोल्ड मेडल का फैसला बहुत कम अंतर से हुआ। धीरज की जीत ने इस प्रतिष्ठित सीजन-एंडिंग इवेंट में भारत का रिकॉर्ड भी बदल दिया। तालुकदार ने पहले 2010 में एडिनबर्ग में ब्रॉन्ज मेडल जीता था, लेकिन टूर्नामेंट की शुरुआत से अब तक कोई भी भारतीय पुरुष गोल्ड मेडल नहीं जीत पाया था।

भारत की एकमात्र अन्य व्यक्तिगत विश्व कप फाइनल चैंपियन डोला बनर्जी हैं, जिन्होंने 2007 में दुबई में महिलाओं का खिताब जीता था।

खिताबी जीत के बाद क्रांति गौड़ पर आईसीसी ने लगाया जुर्माना

दुबई। भारत ने रविवार को श्रीलंका के खिलाफ विमेंस एशिया कप 2026 का फाइनल 72 रन से अपने नाम किया, लेकिन इस जीत के दौरान आईसीसी आचार संहिता के लेवल 1 के उल्लंघन के लिए भारतीय तेज गेंदबाज क्रांति गौड़ पर मैच फीस का 10 प्रतिशत जुर्माना लगाया गया है। इंटरनेशनल क्रिकेट काउंसिल (आईसीसी) ने सोमवार को बताया कि क्रांति गौड़ ने खिलाड़ियों की आचार संहिता के अनुच्छेद 2.5 का उल्लंघन किया है, जिसमें ऐसी भाषा, हरकत या इशारे शामिल हैं जो किसी बल्लेबाज के आउट होने पर उनका अपमान करते हैं या आक्रामक प्रतिक्रिया भड़का सकते हैं। यह घटना श्रीलंका की पारी के शुरुआती ओवर की है, जब क्रांति ने ओपनर इमेशा दुलानी को बोल्ड करने के बाद पवेलियन की ओर इशारा किया। मैच फीस में कटौती के अलावा, क्रांति के अनुशासनात्मक रिकॉर्ड में एक डिमेरिट प्वाइंट भी जोड़ा गया। यह 24 महीने की अवधि में उनका पहला अपराध था।

क्रांति पर यह आरोप ऑन-फील्ड अंपायर सलीमा इम्तियाज और शथिरा जाकिर जेसी ने आरोप लगाए थे। इसमें थर्ड अंपायर रोकेया सुल्ताना और चौथे अंपायर हुमैरा फराह भी शामिल थीं, जिसके बाद आईसीसी इंटरनेशनल पैनल की मैच रेफरी सुप्रिया रानी दास ने यह सजा दी।

क्रांति ने आरोप स्वीकारते करते हुए सजा मान ली, जिससे औपचारिक सुनवाई की जरूरत नहीं पड़ी। आईसीसी के नियमों के तहत, लेवल 1 के अपराधों के लिए खिलाड़ी की मैच फीस का अधिकतम 50 प्रतिशत जुर्माना और दो तक डिमेरिट प्वाइंट्स दिए जा सकते हैं।

एक अलग फैसले में, शुक्रवार को श्रीलंका के हाथों सेमीफाइनल में हार के दौरान धीमी ओवर-रेट बनाए रखने के लिए पाकिस्तान पर मैच फीस का पांच प्रतिशत जुर्माना लगाया गया, क्योंकि समय की छूट को ध्यान में रखने के बाद भी वे अपने लक्ष्य से एक ओवर पीछे पाए गए। आईसीसी कोड ऑफ कंडक्ट के आर्टिकल 2.22 के तहत, अगर कोई टीम तय समय में अपने ओवर पूरे नहीं कर पाती, तो खिलाड़ियों की मैच फीस का 5 प्रतिशत हिस्सा हर ओवर के लिए काट लिया जाता है। पाकिस्तानी कप्तान फातिमा सना ने अपनी गलती मानते हुए सजा स्वीकार कर ली है।

विमेंस एशिया कप के साथ भारत ने 'एशियन गेम्स' के लिए भी बेहतरीन तैयारी की: देवजीत सैकिया

नई दिल्ली। भारतीय टीम ने रविवार को दुबई में खेले गए 'विमेंस एशिया कप 2026' के फाइनल में श्रीलंका को 72 रन से रौंदकर रिकॉर्ड 8वीं बार खिताब जीता। 'विमेन इन ब्लू' के प्रदर्शन से भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड (बीसीसीआई) के अध्यक्ष देवजीत सैकिया बहुत खुश हैं। उनका मानना है कि इस टूर्नामेंट के साथ भारत ने एशियन गेम्स की शानदार तैयारी की है। सैकिया ने सोमवार को पत्रकारों से कहा, 'भारतीय महिला टीम ने काफी अच्छा प्रदर्शन किया है। भारत के सभी मैच एकतरफा रहे हैं। एशिया कप के साथ भारतीय टीम ने एशियन गेम्स 2026 के लिए भी बेहतरीन तैयारी की है। मैं टीम और सपोर्ट स्टाफ को बधाई देता हूं। हमारी यही कोशिश रहेगी कि जीत के इस सिलसिले को जापान (एशियन गेम्स) तक ले जाएं।' सैकिया ने भारतीय महिला क्रिकेट टीम की सफलता का श्रेय बोर्ड के पूर्व सचिव जय शाह को देते हुए कहा, 'जय शाह ने महिला क्रिकेट को बढ़ावा दिया है।

आम्रपाली दुबे ने भोजपुरी इंडस्ट्री के बदलाव पर बात की

भोजपुरी सिनेमा की जानी- मानी अभिनेत्री आम्रपाली दुबे इन दिनों 'बिग-बॉस 20' में नजर आ रही हैं। अभिनेत्री ने भोजपुरी इंडस्ट्री के बदलाव पर बात करते हुए कहा कि हाल के सालों में इंडस्ट्री में फीमेल-ओरिएंटेड कहानियां और फीमेल सुपरस्टार्स के कारण फिल्में ज्यादा सफल हो रही हैं। अभिनेत्री ने बताया कि अब लेखकों को मुश्किल किरदारों के लिए उन्हें पहली पसंद के तौर पर देखना चाहिए। अभिनेत्री से सवाल किया, 'क्या आपको लगता है कि भोजपुरी इंडस्ट्री ने उन्हें काफी चुनौतीपूर्ण किरदार दिए हैं?' अभिनेत्री ने कहा, 'हां, दिए हैं। मुझे लगता है कि जब भी कोई लेखक कोई चुनौतीपूर्ण किरदार लिखता है, तो उसके दिमाग में सबसे पहला नाम आम्रपाली दुबे का ही आना चाहिए।'

अभिनेत्री से आईएएनएस ने एक और सवाल किया, 'क्या आप इस बात से सहमत होंगी कि भोजपुरी सिनेमा की अक्सर आलोचना होती है कि वह दमदार महिला-प्रधान कहानियों के बजाय स्टार जोड़ियों पर ज्यादा निर्भर रहा है? अभिनेत्री ने कहा, 'पिछले तीन, साढ़े तीन साल से भोजपुरी में जो फिल्में चली हैं, वो सिर्फ फीमेल सुपरस्टार्स की फिल्में हैं और ये बहुत गर्व की बात है।' उन्होंने कहा, 'मुझे ये कहते हुए बहुत गर्व महसूस हो रहा है कि हमारी इंडस्ट्री के नियम बदल गए हैं। अगर आप देखेंगे तो आपको पता चलेगा कि पिछले तीन, साढ़े तीन साल, बल्कि चार-पांच साल से काफी महिला-प्रधान फिल्में बन रही हैं और वो अच्छा कर रही हैं। लोगों का बहुत प्यार मिल रहा है।' आम्रपाली ने कहा कि धीरे-धीरे माहौल बदला है। उन्होंने कहा, 'किसी भी बदलाव को लाने में समय लगता है। हम भी अपना समय ले रहे हैं। हम थोड़ा लेट आएंगे लेकिन बहुत मजबूती के साथ आएंगे।' बिग बॉस भारत में बिग बॉस फ्रेंचाइजी का एक भारतीय हिंदी भाषा का रियलिटी टेलीविजन शो है, जो कलर्स टीवी पर आता है।

आप ग्लैमरस भी हो सकते हैं और स्पिरिचुअल भी

पेट्रोल पंप से लेकर सेल्स गर्ल का काम किया

एक्ट्रेस मुग्धा गोडसे ने कई सारी फिल्मों में काम किया है और कई पेजेंट्स भी जीते हैं। उन्होंने एक्टिंग के साथ गायन के क्षेत्र में भी कदम रख दिया है और इसका श्रेय वे अपने गुरु तरनेव जी को देती हैं। एक्ट्रेस ने बातचीत में काफी कुछ कहा है। पुणे के मध्यमवर्गीय परिवार में पली-बढ़ी मुग्धा गोडसे छोटी -सी उम्र में ग्लैमर की गलियों में आ गई थीं। ग्लैडरेग्स मेगा मॉडल हंट की विजेता बनने से पहले उन्होंने भी काफी संघर्ष का सामना किया। फैशन, जेल, हीरोइन, सत्याग्रह जैसी फिल्मों की अभिनेत्री इन दिनों चर्चा में हैं अपनी आध्यात्मिकता को लेकर। इस मॉडल-अभिनेत्री ने हाल ही में गायन के क्षेत्र में भी कदम रखा है। उनकी गाई हुई कृष्ण वंदना का श्रेय वे अपने गुरु तरनेव जी को देती हैं। यहां वे अपनी आध्यात्मिक यात्रा के साथ -साथ अपने पुराने दिनों को भी याद करती हैं।

अध्यात्म के लिए बैराग की जरूरत नहीं

आम तौर पर समझा जाता है कि अध्यात्म और ग्लैमर का साथ-साथ चलना मुश्किल होता है, मगर मुग्धा गोडसे ने इस बात को गलत साबित किया है। वे कहती हैं, 'ये सब कुछ हमारे गुरु श्री तरनेव जी के कारण संभव हो पाया। मैं उनसे 2013 में मिली थी। वहीं से मेरा आध्यात्मिक पहलू मजबूत हुआ। लोग मानते हैं कि अध्यात्म की तरफ जाने के लिए बैरागी होना पड़ता है, मगर ऐसा नहीं है। आप अपने जीवन के दैनिक कार्यों के साथ अध्यात्म की राह पर भी चल सकते हैं।'

गुरु जी ने बदला नजरिया

उन्होंने आगे कहा, 'गुरु जी ने बताया कि भगवान श्रीकृष्ण कहते हैं कि काम भी करना है और पैसे कमाने के लिए ग्लैमरस भी लगना है।मगर इसका मतलब ये नहीं कि स्पिरिचुअल नहीं हुआ जा सकता। मेरा मानना है कि जीवन में गुरु का स्थान केवल एक शिक्षक का नहीं, बल्कि उस प्रकाश स्तंभ का होता है जो व्यक्ति को अंधकार से निकालकर सही दिशा दिखाता है। आधुनिक जीवन की भागदौड़ में अक्सर इंसान स्वयं से दूर हो जाता है, ऐसे में गुरु उसे उसके वास्तविक स्वरूप से परिचित कराते हैं। गुरु जी की आस्था और साधना ने जीवन को देखने का नजरिया बदला है।'

लगातार 30 दिनों तक काम करके 3000 कमाए थे

अपने संघर्ष के दौर को याद करते हुए वे कहती हैं, 'सभी जानते हैं कि मैं एक मिडल क्लास फैमिली से हूं और जब मैंने मॉडलिंग की शुरुआत की तब काफी स्ट्रगल फेस किया। मैं रोजाना पुणे एसटी बसों में से मुंबई अप डाउन किया करती थी। शुक्र है कभी मेरे साथ कोई हादसा नहीं हुआ। मैं कॉलेज के दिनों से ही काफी आत्मनिर्भर रही हूं। ये मेरे टीनेज दौर की बात है। उस दौरान मैं पार्ट-टाइम जॉब्स किया करती थी।'

पेट्रोल पंप पर भी किया काम

उन्होंने आगे कहा, 'इनमें पेट्रोल पंप पर काम करने से लेकर अलग-अलग तरह की सेल्स और प्रमोशनल जॉब्स तक शामिल थीं। पेट्रोल पंप पर मुझे 100 रुपए पर डे मिला करते थे। मेरा मकसद बस इतना था कि रोज करीब सौ रुपए कमा सकूं, ताकि मेरे पास अपने खर्च के लिए एक्स्ट्रा पॉकेट मनी हो। मेरे अंदर हमेशा से यह भावना रही है कि मुझे अपना पैसा खुद कमाना है। एक पेजर कंपनी में भी मैंने काम किया है। मैं और मेरी बहन, साथ ही दोस्तों का एक ग्रुप, ये सारे छोटे-मोटे काम साथ में किया करते थे। कॉलेज के बाद पांच-छह घंटे या जितना समय मिलता, हम काम करते और उससे जो पैसे मिलते, उनसे अच्छा लंच करते या वडा पाव खाते, घूमते-फिरते और अपनी छोटी-छोटी जरूरतें पूरी करते थे।'

पार्ट टाइम जॉब कई सारे किए

मुग्धा ने कहा, 'इसी दौरान मैंने जिम में भी काम किया और बतौर इंस्ट्रक्टर। लेकिन मेरी शुरुआत इन्हीं छोटी-छोटी पार्ट-टाइम जॉब्स से हुई थी। मैंने सेल्स में काम किया, मैं ऑइल बेचने का काम करती थी। मैंने सर्वे किए और कई तरह के प्रमोशनल काम किए। एक समय मैंने लगातार करीब 30 दिनों तक काम करके लगभग 3,000 कमाए थे, जो उस वक्त मेरे लिए बड़ी बात थी। मेरे लिए अपने पैरों पर खड़े होने और खुद कमाने की शुरुआत कुछ इसी तरह हुई थी।'

मिर्जापुर- द मूवीः करियर की पहली 100 करोड़ी फिल्म पर बोलीं रसिका

'मिर्जापुर' फ्रेंचाइजी का किरदार बीना अपने हर पार्ट के साथ अलग-अलग रूप में दिखी है। इस किरदार को रसिका दुग्गल ने निभाया है। यह फिल्म उनके करियर की पहली 100 करोड़ क्लब में एंट्री करने वाली फिल्म है। एक बातचीत में उन्होंने इस पर काफी कुछ कहा।

फिल्म 'मिर्जापुर: द मूवी' पर बोलीं रसिका

फिल्म 'मिर्जापुर: द मूवी' बॉक्स ऑफिस पर तगड़ी कमाई कर रही है। इस पर फिल्म में बीना का किरदार निभाने वाली अभिनेत्री ने अपनी खुशी जाहिर की। उन्होंने बातचीत में कहा, 'कोई भी काम पूरा करने के बाद, मुझे कभी भी परिणाम को लेकर कोई दबाव महसूस नहीं होता। लेकिन इस बार, मुझे उन प्रशंसकों के प्रति जिम्मेदारी का एहसास हुआ जिन्होंने आठ वर्षों तक वफादारी से हमारा साथ दिया और हमें इतना प्यार दिया। मैं बस यह सुनिश्चित करना चाहती थी कि वो खुश हो जाए, पर सिर्फ वो नहीं, और भी बहुत से लोग खुश हो जाएं। मैं सचमुच बहुत खुश हूं।

एक्ट्रेस ने कहा मैं आभारी हूं आगे अपनी बातचीत में रसिका दुग्गल ने कहा, 'अगर मुझे किसी भी स्क्रीन पर आने का मौका मिले, तो मैं आभारी हूं। लेकिन हां, थिएटर का अपना ही एक अलग माहौल होता है। ऐसा लगता है जैसे इतने साल से जिस चीज के लिए हम मेहनत कर रहे थे, उसे अब इतने रोमांटिक अंदाज में पेश किया जा रहा है। यह विचार बहुत रोमांचक है।'

करण जौहर की फिल्म की तारीफ

फिल्ममेकर करण जौहर द्वारा फिल्म की तारीफ किए जाने पर बीना ने कहा, 'अपने साथियों से सराहना मिलना, जिन्होंने इतनी खूबसूरत फिल्में बनाई हैं जिन्हें हमने बार-बार देखा है और याद रखा है, बहुत मायने रखता है। यह एक बिल्कुल अलग तरह का एहसास है। पिछले कुछ दिनों में बहुत से लोगों ने मुझे मैसेज किए। अब तो मुझे लालच आ रहा है, अगर दो घंटे में एक मैसेज भी नहीं आया तो मुझे अजीब लग रहा है । मैंने खून का स्वाद चख लिया है!'

पॉपुलर गाने पर बोलीं एक्ट्रेस

नुसरत फतेह अली खान के गानें 'सांसों की माला पे' को फिल्म 'मिर्जापुर' में नए अंदाज में फिल्माया गया। इसपर रसिका ने कहा, 'किसी लोकप्रिय, दिल को छू लेने वाले और यादों से जुड़े गाने का किसी महत्वपूर्ण दृश्य में बजना अपने आप में बहुत बड़ी उपलब्धि है।' इस गानें को फिल्म में बीना त्रिपाठी और उनके प्रेमी बिरजू लोहार पर फिल्माया गया है।

रश्मिका ने हाइब इंडिया से मिलाया हाथ

अभिनेत्री रश्मिका मंदाना आज जिस मुकाम पर हैं, वहां तक पहुंचने का सफर उनके लिए आसान नहीं रहा। करियर की शुरुआत से लेकर लगातार बड़े प्रोजेक्ट्स का हिस्सा बनने तक रश्मिका ने कई ऐसे पल देखे हैं, जहां खुद पर भरोसा रखना बेहद जरूरी था। अब उन्हें भारत के नए टैलेंट को तलाशने वाली एक बड़ी पहल से जुड़ने का मौका मिला है। इस पर रश्मिका ने कहा कि वह इसे सिर्फ एक काम नहीं, बल्कि युवाओं के सपनों से जुड़ने का जरिया मानती हैं। रश्मिका मंदाना अब हाइब इंडिया के ऑडिशन से जुड़ गई हैं। इस पहल का मकसद भारत के अलग-अलग हिस्सों से टैलेंट को तलाशना, उसे निखारना और आगे बढ़ने का मौका देना है। हाइब वही कंपनी है, जो साउथ कोरिया के कई बड़े के-पॉप कलाकारों और ग्रुप्स के साथ काम करने के लिए दुनियाभर में जानी जाती है। अब भारत में इस ऑडिशन को लेकर काफी उत्सुकता है। हाइब इंडिया ने अपने टैलेंट हंट का दायरा भी बढ़ाया है और इस बार देश के कई नए शहरों में ऑडिशन आयोजित किए जा रहे हैं। इस पहल से जुड़कर रश्मिका काफी एक्साइटेड हैं। उन्होंने कहा, ''यह भारत के युवाओं के लिए ऐसा मौका है, जो उन्हें उस मुकाम तक पहुंचा सकता है जिसकी उन्होंने शायद कभी कल्पना भी न की हो। हर सफर किसी मौके से शुरू होता है और उस मौके को स्वीकार करने के लिए हिम्मत चाहिए होती है। जब मैं अपने सफर को पीछे मुड़कर देखती हूं, तो एहसास होता है कि खुद पर भरोसा बनाए रखना, लगातार मेहनत करना और उन संभावनाओं को हां कहना कितना जरूरी होता है, जो आपको आगे ले जा सकती हैं।''

रश्मिका ने कहा, ''मुझे लगता है कि हाइब इंडिया के साथ यह साझेदारी भारत में अपनी तरह का एक अलग मौका है। हाइब पूरी दुनिया में बड़े कलाकारों और ग्लोबल आवाजों को तैयार करने के लिए जाना जाता है, और अब भारत में आकर यहां के युवा टैलेंट को तलाशना वाकई खास बात है। हाइब इंडिया के ऑडिशन में सिंगिंग, डांस, रैप और दूसरे परफॉर्मेंस से जुड़े हुनर दिखाने का मौका दिया जा रहा है।'' रश्मिका ने देश की उन लड़कियों से इस मौके का फायदा उठाने की अपील की है जो कलाकार, परफॉर्मर या रोल मॉडल बनने का सपना देखती हैं।

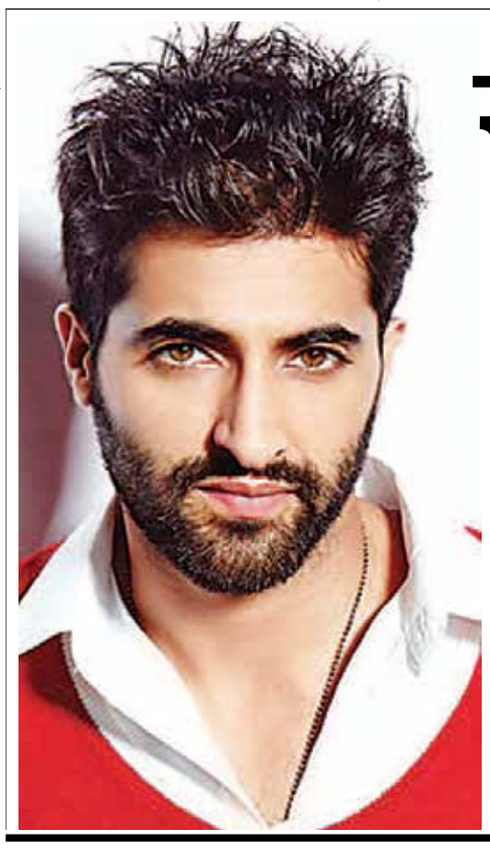

संघर्ष कभी बेकार नहीं जाता

सूरज बड़जात्या की फिल्म से मौका पाने वाले अक्षय ओबेरॉय को लगा था कि वो रातोरात सुपरस्टार बन जाएंगे। हालांकि वे मानते हैं कि उनकी लॉटरी लगी है। उन्होंने कहा- मैंने अपनी बेस्ट फ्रेंड से शादी की है तो इस मामले में मैं खुशकिस्मत रहा हूं। उन्होंने ये भी कहा- बेटे की नजर में मैं सुपरस्टार हूं।

अक्षय ओबेरॉय को जब सूरज बड़जात्या जैसे बड़े फिल्मकार की फिल्म 'इसी लाइफ' में से पहला ब्रेक मिला, तो उन्हें लगा था कि अब तो वे रातोरात सुपरस्टार बन जाएंगे। हालांकि, फिल्म चली नहीं तो अक्षय का सपना भी अधूरा रह गया, मगर उन्होंने हार नहीं मानी। पिज्जा, गुड़गांव जैसी फिल्में हों या फ्लेश, हाई जैसी वेब सीरीज, जब जहां मौका मिला, वे अपना ऐक्टिंग टैलंट दिखाने से नहीं चूके। यही वजह है कि आज फाइटर, टॉक्सिक, किंग जैसी बड़ी फिल्में कर रहे अक्षय अपने बेटे आव्यान के लिए बड़े 'सुपरस्टार' हैं। इन दिनों पुरुषों के हक की आवाज उठाने वाली फिल्म लव लॉटरी के लिए चर्चा बटोर रहे अक्षय बताते हैं, 'असल में, फाइटर बच्चों को बहुत पसंद आई। उसके गाने बच्चों के दिमाग में बैठ गए हैं तो बेटे के स्कूल में उसके दोस्तों को लगता है कि मैं कोई बहुत बड़ा सुपरस्टार हूं। इसलिए बेटे को भी लगता है कि मेरा पापा बहुत बड़ा सुपरस्टार है। आजकल लोग मुझे सड़कों पर पहचान भी रहे हैं जो पहले होता नहीं था तो आव्यान बहुत एक्साइटेड होता है। हम लोग अभी लंदन, पेरिस, घूमकर आए। वहां कोई न कोई भारतीय आकर मुझसे बात करने लगता था तो वो खुश हो जाता था कि देखो, मेरा पापा क्या है! उसके लिए मैं तो हीरो हूं और मैं चाहता हूं कि वह इमेज कभी तोडूं ना। मेरी कोशिश है कि उसकी नजर में मैं कभी कुछ गलत न करूं।'

अक्षय को इस मुकाम तक पहुंचने में डेढ़ दशक लगा। संघर्ष के दौर में वे कैसे डटे रहे? इस पर वह कहते हैं, 'आज जब मैं पीछे मुड़कर देखता हूं तो वो पागलपन ही लगता है। लोग मुझसे कहते थे कि तुममें बहुत क्षमता है, बस एक शुक्रवार की जरूरत है और मैं कहता था कि हां, आप सही कह रहे हैं। मुझे यकीन था कि वो दिन आएगा।

ये जुनून ही था, पागलपन ही था। फिर अचानक एक फाइटर मिल जाती है जो टर्निंग पॉइंट साबित होती है। ये इतने साल की मेहनत ही है कि सिद्धार्थ आनंद जैसा डायरेक्टर आपको रितिक रोशन और दीपिका पादुकोण जैसे स्टार्स के बगल में खड़ा कर देता है और आप कर पाते हैं क्योंकि आपने इतना देखा और झेला है। आपका संघर्ष कभी बेकार नहीं जाता। मैं ऊपरवाले का शुक्रगुजार हूं कि मैं डटा रहा, मैंने छोड़ा नहीं।

ऐक्टिंग के लिए मैं खाना-पीना, सोना सब भूल सकता हूं। मैं ऐक्टिंग न करूं तो डिप्रेस हो जाता हूं। इसलिए, असफलता का मुझ पर कभी असर पड़ा नहीं क्योंकि मैं काम लगातार कर रहा था।'

356 दिन ऐक्टिंग करने को तैयार हूं

अक्षय फ्लेश, हाई, मैडम चीफ मिनिस्टर जैसी सीरीज/फिल्म में अपनी नेगेटिव भूमिका के लिए काफी सराहे गए। जबकि, अरविंद पांडे निर्देशित फिल्म लव लॉटरी में वह प्यार में धोखा खाने वाले सच्चे प्रेमी के रोल में है।

बकौल अक्षय, 'एक ऐक्टर को हर तरह की फिल्म करना चाहिए। मेरे ऊपर लाइमलाइट ऐसे कभी आया भी नहीं कि मेरी कोई इमेज हो कि मैं रोमांटिक हीरो हूं या ऐक्शन हीरो हूं। मैं सिर्फ ऐक्टर हूं, तो अलग-अलग तरह की फिल्में करता रहता हूं। फिर, एक अच्छी स्क्रिप्ट मिलना बहुत मुश्किल काम है। लोगों को लगता है कि ढेर सारी स्क्रिप्ट पड़ी हैं, जिसमें से मैं ये चूज करूंगा, ये नहीं करूंगा, पर ऐसा होता नहीं है। मुझे यह विषय बहुत पसंद आया कि एक आदमी प्यार की वजह से फंस गया।

यह आज की पीढ़ी की कहानी है, इसलिए मैंने यह फिल्म की, क्योंकि मेरी चाहत है कि मैं लगातार कैमरे के सामने रहूं। मैं साल के 356 दिन ऐक्टिंग कर सकूं ना तो मैं करूंगा। मैं चाहता हूं कि मेरी ऐक्टिंग लगातार बेहतर हो। लोग कहें कि तुम्हारी ग्रोथ बहुत बढ़िया है। मैं यह सुनने के लिए भूखा हूं। मेरे लिए ऐक्टिंग एक नशा है तो मैं कुछ अलग ढूंढ़ रहा था और ये स्क्रिप्ट आ गई।'

Protolights™

Simply Bright

अब पुरे देश में प्रोटोलाइट LED लगा दो
स्वदेशी अपनाओ....
विदेशी भगाओ.....

MAKE IN INDIA

PROTOLIGHTS LUMINAIRES LLP, FL 16 WING-A, 163, KALPATRU GARDEN BULDING 1A, ASHOK CHAKRAVARTI ROAD, KANDIVALI (E) MUMBAI - 400101.

Customer Care: +91 7211117067/9979670300 info@swagattamplastic.com www.protolights.com

स्वामी: मारुतिनंदन पब्लिक, संपादक, प्रकाशक व मुद्रक विजय जगदीशचंद्र भट्ट द्वारा गाला नं. 7, तिरुपति इंडस्ट्रीयल एस्टेट, सोमनाथ मंदिर रोड, दाभेल, नानी दमण - 396210 से प्रकाशित तथा असली आजादी प्रेस गाला नं. 7, तिरुपति इंडस्ट्रीयल एस्टेट, सोमनाथ मंदिर रोड, दाभेल नानी दमण - 396210 से मुद्रित।
(समाचारों के चयन के लिए संपूर्ण जिम्मेदारी पीआरबी एक्ट के अंतर्गत संपादक की होगी। किसी भी विवाद का न्याय क्षेत्र दमण न्यायालय के अधीन होगा।)